Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष-39 अंक-20
कल्पादि सम्वत् 1972949115

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 05 अगस्त से 11 अगस्त 2015 तक
श्रावण कृष्ण षष्ठी से श्रावण कृष्ण द्वादशी सम्वत् 2072 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

डिजिटल इंडिया या.. पृष्ठ- 3

ब्रेन स्ट्रोक के मरीज.. पृष्ठ- 4

पालतू जानवर रखने से.... पृष्ठ- 5

STRUCTURAL REFORMS... पृष्ठ- 9

कब जागेंगी सरकारें... पृष्ठ- 12

शुभकामनाएं

भगवान शंकर के जन्मदिवस के रूप में मनाई जाने वाली महाशिवरात्रि पर सभी पाठकों व देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

वीरेश त्यागी
राष्ट्रीय कार्यालयमंत्री

श्रावण मास में शिव अर्चना

● संवाददाता ●

श्रावण मास एक तरफ जहाँ वर्षा ऋतु को लेकर चर्चा में रहता है, वहीं इस माह में नाग पंचमी व रक्षाबंधन आदि त्यौहारों के अलावा पूरे महीने के सोमवार को देवाधिदेव की पूजा भक्तगण धूमधाम से करते हैं। श्रावण मास की महत्ता भगवान शिव की पूजा अर्चना को लेकर और भी बढ़ जाती है। सभी देव–देवताओं में भगवान शिव श्रेष्ठ माने जाते हैं। कांवरियों द्वारा इस पावन मास में शिव पूजन की महिमा की चर्चा अब तो भारत की सीमा लांघ गई है। नेपाल व भूटान के कांवरिए तो गंगाजल रामेश्वर महादेव को अर्पित करने आते हैं, मॉरीशस के शिव भक्त भी अब आने लगे हैं। भारत की कृषि प्रधान संस्कृति के धन–धान्य वर्धन का मास है–सावन। ग्रीष्म के बाद पेड़–पौधें, चर–अचर, जीव–जंतुओं व पर्वतों में नव जीवन का संचार हो जाता है। जीवन प्रदाता जल, शेष पृष्ठ 4 पर

भारतीय इलाकों की जासूसी में जुटा पाकिस्तान

गुरदासपुर की घटना फिर न घटे, सचेत रहें भारतीय एजेंसियां–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

भारत-पाकिस्तान दोनों देशों के बीच संबंध बहाली के प्रयासों के बीच राजस्थान की पश्चिमी सीमा पर पाकिस्तान द्वारा अंतरराष्ट्रीय सीमा नियमों का उल्लंघन कर सीसीटीवी कैमरे लगाए जाने का मामला सामने आया है। अंतरराष्ट्रीय सीमा नियमों के मुताबिक सीमा के दोनों ओर ५०० मीटर के दायरे में ऐसी कोई भी गतिविधि प्रतिबंधित है। माना जा रहा है कि उच्च तकनीक के कैमरों की मदद से पाकिस्तान भारतीय इलाके में सुरक्षा बलों की गतिविधियों और सुरक्षा प्रबंधों की जानकारी जुटाने की कोशिश कर रहा है। हालांकि सीमा सुरक्षा बल ने पाकिस्तान की इस हरकत पर कड़ा एतराज जताया है। सीमा सुरक्षा बल के एतराज के बाद पाकिस्तान ने जैसलमेर जिले से लगती अंतरराष्ट्रीय सीमा पर लगाए गए, कैमरों को हटा दिया है, जबकि बाड़मेर से लगती अंतरराष्ट्रीय सीमा पर कैमरे अब भी लगे हुए हैं। सीमा सुरक्षा बल बाड़मेर सेक्टर के उपमहानिरीक्षक प्रत्युल गौतम ने बताया कि पाकिस्तान द्वारा बाड़मेर से लगती अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास १५० से ५०० मीटर के दायरे में १५ से २० फुट की ऊंचाई पर दस कैमरे लगाए हैं। करीब १५ दिन पहले ये कैमरे लगाए गए थे। सीमा सुरक्षा बल द्वारा इस पर कड़ी आपत्ति जताते हुए पाकिस्तानी रेंजरों के समक्ष विरोध दर्ज कराया गया है। पाकिस्तान द्वारा कैमरे नहीं हटाए जाने की स्थिति में यह मामला उपमहानिरीक्षक और महानिरीक्षक स्तरीय वार्ता में उठाया जाएगा। बीएसएफ के उच्च आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि अत्याधुनिक तकनीकयुक्त यह कैमरे एक से दो किलोमीटर दूरी तक की जानकारी जुटा सकते हैं। साथ ही इन कैमरों में सौर ऊर्जा आधारित बैटरी भी लगायी गयी है। सीमा सुरक्षा बल के प्रवक्ता शेष पृष्ठ 11 पर

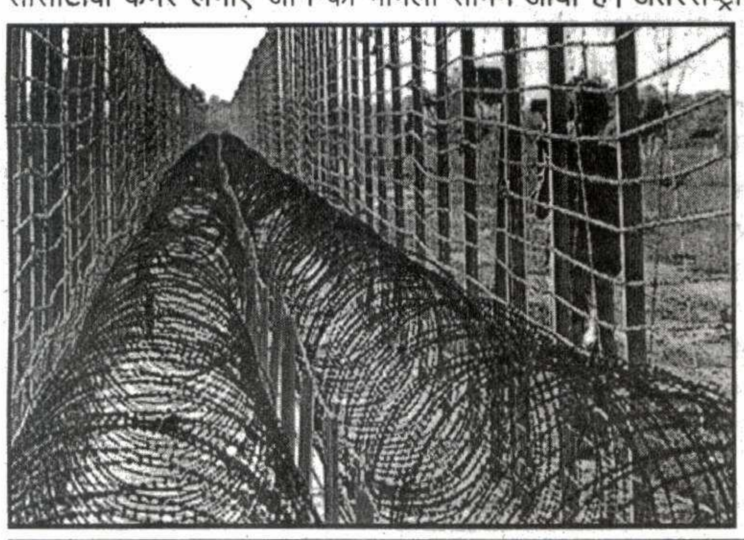

आजादी का परवाना बटुकेश्वरदत्त

अमर क्रान्तिकारी और स्वतन्त्रता सेनानी बटुकेश्वर दत्त को देश ने सबसे पहले ८ अप्रैल, १६२६ को जाना, जब वे शहीद–ए–आजम भगतसिंह के साथ केन्द्रीय विधानसभा में बम विस्फोट के बाद गिरफ्तार किए गए। बटुकेश्वरदत्त का जन्म १८ नवम्बर, १६१० को बंगाल के वर्द्धवान जिले के ग्राम औरी के एक बंगाली परिवार में हुआ था। उनका बचपन औरी के अलावा और कई जगहों पर भी बीता। दत्त की स्नातक स्तरीय शिक्षा कानपुर के पीपीएन कॉलेज में सम्पन्न हुई। वर्ष १६२४ में कानपुर में ही उनकी मुलाकात भगतसिंह से हुई। इसके बाद उन्होंने हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के लिए कानपुर में कार्य करना प्रारम्भ किया। इसी क्रम में उन्होंने बम बनाना भी सीखा।

८ अप्रैल, १६२६ को दिल्ली स्थित केन्द्रीय विधान सभा (वर्तमान का संसद भवन) में भगत सिंह के साथ बम विस्फोट कर ब्रिटिश राज की तानाशाही का विरोध किया। हालांकि विस्फोट किसी को नुकसान पहुंचाने के लिए नहीं किया गया था। विस्फोट के बाद भगतसिंह और बटुकेश्वरदत्त ने फेंके गए पर्चों के माध्यम से अपनी बात को प्रचारित किया। उस दिन भारतीय स्वतन्त्रता सेनानियों को दबाने के लिए ब्रिटिश सरकार की ओर से 'पब्लिक सेफ्टी बिल' और ट्रेड डिस्प्यूट बिल' लाया गया, जो लोगों के विरोध के कारण एक वोट से पारित नहीं हो पाया। इस घटना के बाद बटुकेश्वरदत्त और भगतसिंह को गिरफ्तार कर लिया गया। १२ जून, १६२६को इन दोनों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। सजा सुनाने के बाद इन लोगों को लाहौर फोर्ट जेल में डाल दिया गया। गौरतलब है कि 'साइमन कमीशन' के विरोध–प्रदर्शन के दौरान लाहौर में लाला लाजपतराय को अंग्रेजों के इशारे पर अंग्रेजी राज के सिपाहियों द्वारा इतना पीटा गया कि उनकी मृत्यु हो गई।

इस मृत्यु का बदला लेने के लिए क्रान्तिकारियों द्वारा अंग्रेजी राज के जिम्मेदार पुलिस अधिकारी को मारने का निर्णय किया गया था। इस कार्रवाई के परिणामस्वरूप लाहौर षड्यन्त्र केस' चला, जिसमें भगतसिंह, राजगुरु और सुखेदव को फांसी की सजा दी गई थी। बटुकेश्वर दत्त को आजीवन कारावास काटने के लिए कालापानी जेल भेज दिया गया। जेल में ही उन्होंने वर्ष १६३३ और १६३७ में ऐतिहासिक भूख हड़ताल की। सेल्यूलर जेल से वर्ष १६३७ में दत्त को बांकीपुर केन्द्रीय कारागार, पटना लाया गया। यहीं से वर्ष १६३८ में उनकी रिहाई हुई। कालापानी से गम्भीर बीमारी लेकर लोटे दत्त गिरफ्तार कर लिए गए और चार वर्षों के बाद १६४५ में रिहा किए गए। आजादी के बाद नवम्बर, १६४७ में अंजली दत्त से शादी करने के बाद वे पटना में रहने लगे। बटुकेश्वर को अपना सदस्य बनाने का गौरव बिहार विधान परिषद ने वर्ष १६६३ में प्राप्त किया। बीमारी से जूझ रहे दत्त ने २० जुलाई, १६६५ को नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में अन्तिम सांस ली। मृत्यु के बाद उनका दाह संस्कार उनके अन्य क्रान्तिकारी साथियों भगतसिंह, राजगुरु एवं सुखदेव के समाधि स्थल पंजाब के हुसैनीवाला में किया गया–ऐसा इसलिए किया गया, क्योंकि यह उनकी अन्तिम इच्छा थी।

वेदवाणी

ॐ उदुत्तमं वरुण! पाशमशस्मद्-अवाधमं वि मध्यमं श्रथाय।
अथा वयमादित्य! व्रते तव, अनागसो अदितये स्यामा।।
(अथर्व-७/८३/३ ऋ. १/२४/१५ यजु. १२/१२)

हे भक्तजनों के द्वारा वरण करने योग्य! सत्यानन्दनिधि! देव! हम में जो सत्त्वगुणरूप उत्तम पाश है–ज्ञान एवं सुख के संग द्वारा बन्धन का कारण है, उसका सर्वोत्कृष्ट सर्वगत प्रत्यगभिन्न अद्वय ब्रह्मतत्व के ज्ञान द्वारा विच्छेद कर। तथा तमोगुणरूप जो अधम पाश है, प्रमाद आलस्यादि के उत्पत्ति द्वारा बन्धन का हेतु है– उसका भी विध्वंस कर। तथा रजोगुणरूप जो मध्यम पाश है, राग–तृष्णा–आदि की उत्पत्ति के द्वारा बन्धन का प्रयोजक है, उसका भी विनाश कर। उसके बाद हे चराचर विश्व के आत्मा आदित्य! हम सब पापों से एवं अपराधों से रहित निर्द्वन्द्व हुये तुझ परमेश्वर की भजन निष्ठा में सदा प्रवर्तमान बनें। तथा दीनता रहित अखंडैकरस निस्त्रैगुण्य ब्रह्मपद को प्राप्त करने के लिये योग्य बनें, ऐसी हम आपसे प्रार्थना करते हैं।

साप्ताहिक राशिफल

मेष - इस सप्ताह गहरी विचारधारा व प्रेरणादायक कदम जीवन में एक सकारात्मक परिवर्तन करायेंगे। आपके मन में समाजवाद की भावना उत्पन्न हो सकती है जिसके फलस्वरूप मन चिन्तित रह सकता है। कुछ पारिवारिक मुद्दों पर संवेदनशील रहने की आवश्यकता है।

वृष - मन की भावनाओं में न बहकर दिमाग का उपयोग करें तो बेहतर परिणाम मिलेंगे। पितृ पक्ष से वैचारिक मतभेद होने की सम्भावना नजर आ रही है। कुछ लोगों का राजनैतिक लोगों से वाद–विवाद हो सकता है। किसी नये कार्य के प्रति सचेत व सजग रहने की आवश्यकता है।

मिथुन - इस सप्ताह क्रोध को अपने उपर हावी न होने दें अन्यथा बनी बनाई योजनाओं पर पानी फिरने के आसार नजर आ रहे हैं। छात्रों को अपने कीमती समय का सदउपयोग करने की आवश्यकता है। किसी के प्रति वह न करें जो आपको पसन्द न हों।

कर्क - इस सप्ताह आपको किसी नजदीकी व्यक्ति से पीड़ा मिल सकती है। सिंह का गुरू आपके दूसरे भाव में गोचर करेगा। धन की स्थिति बेहतर होगी। कुछ लोगों के ससुराल से रिश्ते मधुर होंगे। जरूरी कर्य स्वयं करें न कि दूसरों के सहारे रहें।

सिंह - इस सप्ताह कुछ लोगों की अर्थ से जुड़ी समस्याओं का समाधान होने का समय आ गया है। प्रत्येक मिथक को तोड़ना आपका कर्तव्य है क्योंकि यह आपके लिए चुनौती है। कुछ लोगों के प्रति सहानुभूति रहेगी, यह आपका सकारात्मक पक्ष है।

कन्या - जिस कार्य के मार्ग में कठिनाईयां न आयें उसकी सफलता में संदेह करने करना चाहिए। आप सुख व शन्ति का अनुभव कर सकते हैं, बशर्ते आवश्यकताओं की प्राथमिकतायें सुनिश्चित करनी होगी। परिवार की दृष्टिकोण से आप में वह सब गुण विद्यमान है, जो एक सभ्य मनुष्य में होने चाहिए।

तुला - जिस कार्य के मार्ग में कठिनाईयां न आयें उसकी सफलता में संदेह करने करना चाहिए। आप सुख व शन्ति का अनुभव कर सकते हैं, बशर्ते आवश्यकताओं की प्राथमिकतायें सुनिश्चित करनी होगी।

वृश्चिक - विपत्तियां आपके धैर्य व साहस की परीक्षा लेने आती है। आप जिन वस्तुओं की जिन परिस्थितियों में इच्छा रखते हैं, उनका प्राप्त न होना विपत्ति है। विपत्तियां साहस के साथ कर्म क्षेत्र में बढ़ रहीं हैं, यह आपके लिए चुनौती का विषय है, उनसे घबरायें नहीं।

धनु - इस सप्ताह आप–अपनी समस्त शक्तियों को एकाग्र करके किसी भी क्षेत्र में कार्य करेंगे तो निश्चित रूप से संतोषजनक सफलता प्राप्त होगी। साथ ही शक्तियां और अधिक विकसित होंगी।

मकर - इस सप्ताह कुछ लोगों को नयें अवसरों की तलाश में भटकना पड़ सकता है। जीवन की कोई भी साधना कठिनाईयों में होकर निकलने पर पूर्ण होती है। जरूरत इस बात की है, कि कसौटी पर सफल होने के प्रयास न छोड़े। अपना संघर्ष जारी रखें।

कुम्भ - इस सप्ताह पुरानी समस्याओं के समाधान के लिए किसी अपने का सहयोग लेना पड़ सकता है। परिक्षा की अग्नि में तपकर ही आप शक्तिशाली, सौन्दर्युक्त और उपयोगी बन सकते हैं। धन आयेगा किन्तु उतनी ही तेजी से उसके व्यय होने के आसार हैं।

मीन - आप की इच्छा हो या न हो, जीवन में परिवर्तनशील परिस्थितियां आती रहेगी। आज उतार है तो कल चढ़ाव। चढ़े हुए गिरते हैं, और गिरे हुए उठते हैं। समय का सदपयोग करके आप हर चीज को हासिल करने का हुनर रखते हैं।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।।

इस कर्म योग में आरम्भ का अर्थात् बीज का नाश नहीं है और उलटा फलरूप दोष भी नहीं है, बल्कि इस कर्मयोग रूप धर्म का थोड़ा सा भी साधन जन्म मृत्यु रूप महान् भय से रक्षा कर लेता है।।४०।।

व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन।
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम्।।

हे अर्जुन! इस कर्म योग में निश्चयात्मिका बुद्धि एक ही होती है, किन्तु अस्थिर विचार वाले विवेक हीन सकाम मनुष्यों की बुद्धियाँ निश्चय ही बहुत भेदों बौर अनन्त होती हैं।।४१।।

यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः।
वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः।।
कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम्।
क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति।।
भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम्।
व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते।।

हे अर्जुन! जो भोगों में तन्मय हो रहे हैं, जो कर्म फल के प्रशंसक वेदवाक्यों में ही प्रीति रखते हैं, जिनकी बुद्धि में स्वर्ग ही परम प्राप्य वस्तु है और जो स्वर्ग से बढ़कर दूसरी कोई वस्तु ही नहीं है ऐसा कहने वाले हैं, वे अविवेकीजन इस प्रकार की पुष्पित अर्थात् दिखाऊ शोभायुक्त वाणी को कहा करते हैं जो कि जन्म रुप कमल देने वाली एवं भोग तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये नाना प्रकार की बहुत सी क्रियाओं का वर्णन करने वाली है, उस वाणी द्वारा जिनका चित्त हर लिया गया है, जो भोग और ऐश्वर्य में अत्यन्त आसक्त हैं, उन पुरुषों की परमात्मा में निश्चयात्मिका बुद्धि नहीं होती।।४२–४४।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 05 अगस्त से 11 अगस्त 2015 तक

अध्यक्षीय

सतर्क और सचेत रहे भारत

सच्चांई यही है कि पाकिस्तान के अर्धसैनिक बलों ने ईद के अवसर पर शनिवार को वाघा सीमा पर भारतीय सीमा सुरक्षा बल दी गई मिठाइयों को स्वीकार नहीं किया। यह दोनों देशों के बीच कड़वाहट भरे अस्थिर संबंधों को दर्शाता है। ईद के अवसर पर इस तरह के उपहारों को देने की परंपरा रही है और राजनीतिक एवं सुरक्षा संबंधी तनावों का असर शायद ही इस पर कभी पड़ा हो। यहां तक कि वर्ष २०१४ में भी ऐसा कुछ देखने को नहीं मिला जब दोनों देशों के बीच रिश्ते अत्यधिक तल्ख थे। इस वर्ष समूची अंतरराष्ट्रीय सीमा पर ईद के अवसर पर यह कड़वाहट ऐसे समय में देखने को मिली जब दोनों देशों के नेताओं ने ईद से कुछ दिन पूर्व ही १० जुलाई को रूस के शहर उफा में शंघाई सहयोग संगठन की बैठक के दौरान अलग से मुलाकात की थी और सकारात्मक रुख दर्शाया था। इस मुलाकात के दौरान दोनों देशों ने मैत्री और सहयोग के साथ आगे बढ़ने की बात कही थी। इतना ही नहीं, उस समय दोनों देशों के विदेश सचिवों ने एक संयुक्त वक्तव्य भी पढ़ा था। जिसमें दोनों ही देशों ने कुछ हद तक उदारता अपनाते हुए पारस्परिक सद्भाव दर्शाया था। उफा बैठक के बाद हुए इन घटनाक्रमों से निश्चित ही दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय रिश्ते कमजोर हुए हैं। १९७२ में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और पाकिस्तानी समकक्ष जुल्फिकार अली भुट्टो के बीच शिमला

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

समझौते पर हस्ताक्षर होने के बाद से ही भारत की कोशिश रही है कि पाकिस्तान के साथ संबंधों को सामान्य किया किया जाए। पूर्वी पाकिस्तान को खोने और अपमानित होने के बाद पाकिस्तानी सेना ने भारत के खिलाफ अपने रुख को और अधिक तल्ख व आक्रामक बना लिया। इसी कड़ी के तहत विशुद्ध इस्लामिक पाकिस्तान को बढ़ावा दिया गया और पाकिस्तान में रह रहे हिंदुओं पर प्रभुत्व कायम किया गया। लेकिन संबंधों को सुधारने के प्रयास के इस माहौल में ईद में कश् मीर में जो कुछ हुआ, उससे पाक के नापाक इरादे अवश्य स्पष्ट हो गये हैं। ईद के दिन कश्मीर के विभिन्न हिंस्सों में जो कुछ हुआ उसे पागलपन के अलावा और कुछ नहीं कहा जा सकता। श्रीनगर के साथ–साथ राज्य के कई इलाकों में नमाज के बाद शांतिपूर्ण प्रदर्शन के बहाने जिस तरह हिंसक घटनाओं को अंजाम दिया गया और इस दौरान पाकिस्तान के साथ–साथ दुनिया के सबसे वहशी और खूंखार आतंकी संगठन आइएस के झंडे फहराए गए उससे कुल मिलाकर इस त्योहार की मर्यादा ही तार–तार हुई। अब इसमें कोई दोराय नहीं कि जिन अलगाववादी नेताओं ने उपद्रव कराकर कश्मीर को शर्मसार किया वे ही कश्मीरी समाज के सबसे बड़े दुश्मन हैं। दुर्भाग्य से पागलपन का परिचय केवल अलगाववादी नेताओं ने ही नहीं, बल्कि पाकिस्तानी सेना ने भी दिया। पाकिस्तानी सेना ने पहले तो सीमा सुरक्षा बल की ओर से भेंट की जा रही मिठाई लेने से इंकार कर दिया और फिर सारी शर्म तजकर गोलियां बरसाने में जुट गई। ऐसा लगता है कि पाकिस्तानी सेना ने भारत को उकसाने के साथ–साथ नवाज शरीफ को शर्मिंदा करते रहने का भी फैसला कर लियां है। शायद वह भारत के अंध विरोध से ग्रस्त होकर यह समझने से भी इंकार कर रही है कि उसकी ऐसी हरकतों से देश-दुनिया को क्या संदेश जाएगा। उसकी ओर से की गई गोलीबारी में पांच कश्मीरी घायल हो गए, जिनमें से तीन को अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। क्या इसे ही ईद की सौगात कहा जाए। पाकिस्तानी सेना पिछले कई दिनों से गोलीबारी कर आम नागरिकों को निशाना बनाने में लगी हुई है। गौर करें यह वही सेना है जो खुद को कश्मीरियों का सबसे बड़ा हितैषी बताती है। यदि पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ अपनी सेना की ऐसी हरकतों को रोक पाने में समर्थ साबित नहीं होते तो इससे उनके लिए अपने उन लोगों को जवाब देना मुश्किल होगा जो भारत से संबंध सुधारने की इच्छा रखते हैं अथवा यह चाहते हैं कि पाकिस्तान एक जिम्मेदार राष्ट्र के रूप में सामने आए। पाकिस्तानी सेना और उसकी खुफिया एजेंसी आइएसआइ के रुख–रवैये से यह स्पष्ट है कि वह भारत से संबंध सुधार की तनिक भी इच्छुक नहीं। इन स्थितियों में भारत को इसकी ज्यादा उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। अखिल भारत हिन्दू महासभा पाकिस्तान के संबंध में स्पष्ट है कि मिठाई के कारोबार को बन्द करके सख्ती से पेश आना चाहिए और सांप का फन कुचलने को तैयार रहना चाहिए।

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

डिजिटल इंडिया या केवल दिखावा

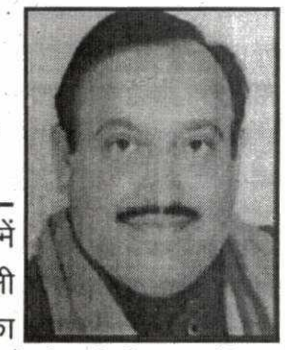

अभी हम गांव क्या शहरों को भी पर्याप्त मात्रा में बिजली नहीं दे पा रहे हैं। जरा सा पारा चढ़ता है, तो बिजली की मारामारी शुरू हो जाती है। इसी तरह पीने के पानी का संकट हमेशा दिखाई देता है। फिर ऐसी आधी अधूरी तैयारी के बीच डिजिटल इंडिया कैसे? भारत में ज्ञान समाज और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की स्थापना की दिशा में दूरदर्शी कदम सिद्ध हो सकता है लेकिन बिना अनुकूल माहौल, परिस्थितियों, मानसिकता और ढाँचे के इसकी कामयाबी संदिग्ध बनी रहेगी। हमारे यहाँ ऐसी महत्वाकांक्षी परियोजना के रास्ते में आने वाली रुकावटों की कोई कमी नहीं है। सबसे पहली समस्या बिजली को लेकर आने वाली है। माना कि हम गांव–गांव के लोगों को डिजिटल इंडिया के जरिए सेवाओं, सूचनाओं और सुविधाओं की ऑनलाइन डिलीवरी के नेटवर्क के अंतिम छोर पर तैनात कर देंगे। लेकिन बिजली ही नहीं होगी तो आम आदमी इन सेवाओं का उपभोग कैसे करेगा। दूरसंचार टावरों और इंटरनेट ढाँचे के लिए जरूरी बिजली कहाँ से आएगी। देश के ज्यादातर बिजली बोर्ड आज दीवालिएपन की स्थिति में हैं। एक तो बिजलीघरों की संख्या ही कम है, दूसरे जो बिजली उत्पादन कर रहे हैं वे भी पूरी क्षमता से नहीं कर रहे। बिजली के वितरण में इतनी खामियाँ

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

हैं कि अंतिम छोर पर मौजूद व्यक्ति तक पहुंचते पहुँचते एक तिहाई से ज्यादा बिजली बर्बाद हो जाती है। डिजिटल इंडिया की कामयाबी के लिए मजबूत डिजिटल तंत्र की स्थापना से पहले मजबूत, पर्याप्त और भरोसेमंद बिजली प्रणाली की व्यवस्था ज्यादा जरूरी है। डिजिटल इंडिया के सफल क्रियान्वयन के लिए दूरसंचार स्पेक्ट्रम की बड़े पैमाने पर जरूरत होगी। लेकिन बिजली की ही तरह इस मोर्चे पर भी भारत में खासा संकट है। ज्यादातर टेलीकॉम कंपनियाँ ठीकठाक स्पेक्ट्रम की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए संघर्ष कर रही हैं। आज भारतीय दूरसंचार क्षेत्र में जिस समस्या को लेकर सर्वाधिक चिंता और चर्चा है, वह है बार–बार मोबाइल काल ड्रॉप होने की समस्या। इसकी मूल वजह है– पर्याप्त स्पेक्ट्रम का अभाव। जब हम निर्बाध टेलीफोन काल ही सुनिश्चित नहीं कर सकते तो निर्बाध इंटरनेट कनेक्टिविटी और वह भी तेज स्पीड से कैसे मुहैया कराएंगे। जिस किस्म के महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को लेकर हम आगे बढ़ रहे हैं उन्हें देखते हुए न्यूनतम पाँच एमबीपीएस की इंटरनेट स्पीड की जरूरत पड़ेगी। फिर जिन सेवाओं को ऑनलाइन माध्यमों से आम लोगों तक पहुँचाया जाना है उनके डिजिटलीकरण की क्या स्थिति है। सरकारी दस्तावेजों और सेवाओं के डिजिटलीकरण की मौजूदा स्थिति बहुत आश्वस्तकारी नहीं दिखती। इसका ऑडिट कराने और डिजिटलीकरण में तेजी लाने की जरूरत है। जाहिर है चुनौती कई दिशाओं से आ रही है। निजी उद्योगों को साथ लेकर सरकार ने अच्छा कदम उठाया है लेकिन उन्हें अपने हाल पर नहीं छोड़ दिया जाना चाहिए बल्कि उनकी कारोबारी पहलों की कामयाबी सुनिश्चित करने का जिम्मा भी केंद्र सरकार को उठाना होगा। सरकारी प्रक्रियाओं का सरलीकरण, लालफीताशाही की दीवार को ध्वस्त करना और विकास में हाथ बँटाने वालों को वास्तविक प्रोत्साहन देने की कितनी जरूरत है, इस पर पिछले अनेक वर्षों से बहुत कुछ कहा जा चुका है। अनेक पश्चिमी देश अपनी अर्थव्यवस्थाओं को नोटों के प्रयोग से मुक्ति दिलाने का लक्ष्य बनाया है। स्वीडन और डेनमार्क कैशलेश समाज में बदलने जा रहे हैं जहाँ धन के भुगतान और लेनदेन में या तो प्लास्टिक कार्डों का प्रयोग होगा या फिर ऑनलाइन माध्यमों का। वे अपने लक्ष्य के बहुत करीब पहुँच भी चुके हैं। उदाहरणों की कमी नहीं है। भविष्य ही बताएगा कि भारत जो सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक महाशक्ति से कम नहीं है, डिजिटल इंडिया की कामयाबी के साथ खुद एक मिसाल बन पाता है या नहीं। या यह भी मोदी के द्वारा दिखाया गया एक नया सपना ही साबित होकर रह जायेगा।

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

ब्रेन स्ट्रोक के मरीज पश्चिमी देशों के मुकाबले भारत में ज्यादा

पैंतीस साल के युवा अरूण कुमार को जब अचानक सिर में दर्द हुआ तो वह तुरन्त न्यूरोलोजिस्ट के पास गए। तब उन्हें पता चला कि यह दर्द कोई मामूली दर्द नहीं, बल्कि ब्रेन स्ट्रोक का रूप था। यह कहना गलत नहीं होगा कि यह अरूण के लिए घातक साबित हो सकता है और यह जीवन भर के लिए लकवे जैसी बीमारी से भी ग्रस्त कर सकता है। अरूण का कहना था कि उन्हें दर्द तो होता था, पर इस बात का अहसास नहीं था कि इतनी कम उम्र में उन्हें ब्रेन स्ट्रोक भी हो सकता है। तंत्रिका विज्ञान के विशेषज्ञों का कहना है कि कम उम्र में लोगों को ब्रेन स्ट्रोक जैसी बीमारियां होने लगी हैं। यह वाकई चिंता का विषय है। इस रोग को जानने और समझने के लिए इंडियन कौंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर) ने एक रिसर्च प्रोजेक्ट तैयार किया है। इस पर पोस्ट ग्रेजुएट रिसर्च इंस्टीटयूट चंडीगढ़ के डॉक्टर काम कर रहे हैं। इस अनुसंधान से यहपता चलता है कि ब्रेन स्ट्रोक के मरीज पश्चिमी देशों के मुकाबले भारत में ज्यादा हैं। यहां यह प्रतिशत कोई २५ से ३० है वह भी चालीस साल से कम उम्र के लोगों में।

दस साल के गहन अनुसंधान के बाद डॉक्टरों ने यह माना है कि भारत में ब्रेन स्ट्रोक के मामले ज्यादा पाए जा रहे हैं। यह संख्या कहीं से भी घटती नजर नहीं आ रही। आजकल के युवा भी इसकी चपेट में आ रहे हैं। आखिर यह ब्रेन स्ट्रोक है क्या? दरअसल मस्तिष्क तक आक्सीजन पहुंचाने वाली धमनी में किसी तरह की रुकावट या खून का थक्का बन जाता है तो वहां आक्सीजन की कमी हो जाती है। अगर नतीजा गंभीर नहीं हुआ तो मस्तिष्क का जो भाग प्रभावित होता है वह अपने द्वारा संचालित हो रहे अंग पर असर डाल सकताहै। ब्रेन स्ट्रोक के सामान्य लक्षण हैं। हाथ, बांह, पैर और चेहरे का सुन्न होना खास तौर से एक तरफ से। हाथ में भारीपन और कमजोर महसूस होना। चलने-फिरने में दिक्कत, अपने आपको संतुलन में न रखपाना, अचानक सिर में तेजदर्द और साफ दिखाई नं देना। बोलने में परेशानी और कई शब्दों को गलत उच्चारित करना। एक अनुसंधान के अनुसार कई लोग इसकी चपेट में आ सकते हैं खासकर जो लोग हाई ब्लड प्रेशर, मधुमेह से पीड़ित हैं और धूम्रपान करते हैं। अगर कोई पूरे दिन में दस सिगरेट पीता है जो उसके लिए ब्रेन स्ट्रोक का खतरा सात गुना बढ़ जाता है।शराब पीने वाले और जरूरत से ज्यादा मोटे लोगों में भी यह खतरा बना रहता है। डॉक्टरों का यह भी कहना है कि

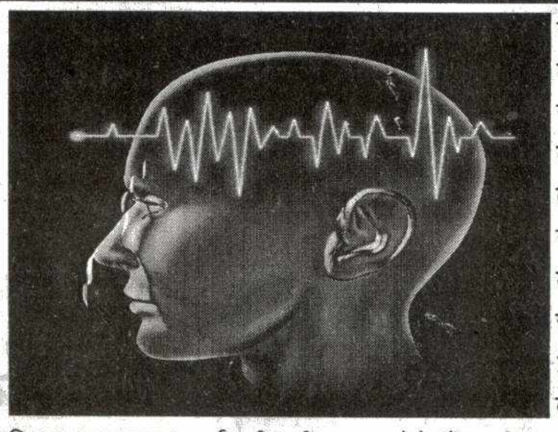

जिस तरह युवा वर्ग की जीवन शैली में बदलाव आया है। इससे भी ब्रेन स्ट्रोक के मामले बढ़ रहे हैं। इसके लिए काफी हद तक जीव भी जिम्मेदार है। कई बार युवाओं में ब्रेन स्ट्रोक की वजह आनुवांशिक भी मानी गई है। पांच सौ युवाओं पर हुए अध्ययन के बाद चिकित्सकों ने यह माना है कि ब्रेन स्ट्रोक का एक कारण अनुवांशिक भी होता है। अगर उस जीन के बारे में पता चल जाए तो युवाओं में हो रहे ब्रेन स्ट्रोक के मामले को काफी हद तक रोका जा सकेगा। दुःख की बात तो यह है कि जहां एक साल में ३६०० मरीज इस बीमारी के शिकार होते हैं वहां मात्र २० मरीजों का ही समय पर उपचार हो पाता है। मस्तिष्क आघात होने के तीन घंटे के अंदर मरीज अस्पताल पहुंच जाए तो इसके खतरनाक परिणामों को दवाइयों से कम किया जा सकता है। लगभग २० फीसदी मरीज समय पर न पहुंच पाने के कारण ही मौत के मुंह में चले जाते हैं और जो लोग ब्रेन स्ट्रोक होने के काफी देर बाद अस्पताल जाते हैं, वे या तो लकवे से ग्रस्त हो जाते हैं या कोई उनमें कोई विकृति आ जाती है। नतीजतन उन्हें लंबे समय तक फिजियोथेरेपी और स्पीचथेरेपी करानी पड़ती है। भारत में कई बड़े चिकित्सा संस्थान हैं, जहां ब्रेन स्ट्रोक का बेहतर इलाज किया जाता है। हालांकि इसके इलाज का खर्च आम आदमी नहीं उठा सकता। ऐसी हालत में या तो वह मौत का शिकार हो जाता है या जिंदगी भर के लिए अपाहिज। ऐसी हालत में लोगों को ब्रेन स्ट्रोक के लक्षण पहचानने की कोशिश करनी चाहिए जरा भी संदेह हो तो डॉक्टर से तुरन्त मिलना चाहिए। सबसे बड़ी बात तो यह कि हमें स्वस्थ और संतुलित जीवन शैली अपनाने की कोशिश करनी चाहिए। मोटापा, मधुमेह और हाई ब्लडप्रेशर से जितना बचें उतना अच्छा।

सरदर्द से राहत के लिए क्या करें?

१. तेज पत्ती की काली चाय में नींबू का रस निचोड़ कर पीने से सरदर्द में अत्यधिक लाभ होता है।
२. नारियल पानी में सोंठ पाउडर का लेप बनाकर उसे सर पर लेप करने से भी सरदर्द में आराम पहुंचेगा।
३. सफेद चन्दन पाउडर को चावल धुले पानी में घिसकर उसका लेप लगाने से भी फायदा होगा।
४. सफेद सूती कपड़ा पानी में भिगोकर माथे पर रखने से भी आराम होगा।
५. लहसुन पानी में पीसकर उसका लेप भी सरदर्द में लाभदायक होता है।
६. लाल तुलसी के पत्तो को कुचल कर उसका रस दिन में माथे पर २,३ बार लगाने से भी सरदर्द में आराम होगा।
८. इस धनिया लगाने से बहुत आराम मिलेगा।
६. सफेद सूती कपड़े को सिरके में भिगोकर माथे पर रखने से भी दर्द में राहत मिलेगी।

शेष पृष्ठ 1 का

श्रावण मास में शिव.....

सृष्टि के कण-कण को आप्लावित कर देता है। समतल क्षेत्रों व वन पर्वतों में हरियाली छा जाती है। अपार जन समूह सृष्टि के सुख संपत्ति प्रदाता शिव पार्वती के पूजन हेतु चल पड़ता है। दसों दिशाएँ अमरनाथ से कन्याकुमारी तक व कामरूप से सोमनाथ तक संपूर्ण शिव शिवा संस्कृति का अंचल बम-बम भोला, जय शिवशंकर के उद्घोष से गुंजायमान हो जाता है। समग्र हिंदू समाज में सावन मास के आरंभ से ही धर्मिक कृत्यों व ध र्मानुष्ठानों का सिलसिला संपूर्ण भारतवर्ष में आरंभ हो जाता है। श्रावण मास श्रद्धा ही नहीं, शुद्धि का मास भी है। इस माह में वस्त्र, गृह व अंतर-बाह्य की परिशुद्धता के क्रियाकलाप आरंभ हो जाते हैं। यह समस्त क्रियाकलाप सावन से आश्विन तक चलते रहते हैं अर्थात ज्योर्तिलिंग पूजन से शक्ति पूजन तक विभिन्न धार्मिक कृत्यों में जन समुदाय संलग्न रहता है। भाद्रमास में माता-पिता की तप साधना का चरमोत्कर्ष दिवस हरि तालिका व्रत की साधना समस्त स्त्रियाँ करती हैं। शक्ति, बुद्धि, रीद्धि-सिद्धि प्रदाता आदि देवता व प्रथम पूज्य श्रीगणेश का जन्मोत्सव भी शिव-शिवा संस्कृति के ही प्रतीक के रूप में मनाया जाता है।

इन समस्त समीकरणों से स्पष्ट है कि भारत के कण-कण में शिव ज्योर्तिलिंग पूजन समृद्धि, श्रद्धा, निष्ठा व भक्ति के अध्यात्मक जन्य, मंगल के प्रतीक है। आशुतोष, औघड़दान व परम प्रभु भोलेनाथ शिवशंकर के द्वार से कभी कोई खाली हाथ नहीं लौटता है, ऐसी जन मानस की आस्था है। मनोकामना पूर्ति की अनेकों कथाएँ शिव पुराण, मार्कण्डेय पुराण, शिव संहिता आदि ग्रंथों में वर्णित है। भगवान शंकर को सनातन संस्कृति में समता, विषयक, समन्वय का साकार स्वरूप माना गया है। सनातन संस्कृति की पावन ऋषि परिकल्पना में शिव शिवा पूजन में भी पुत्र गणपति ही प्रथम पूज्य हैं। शिव ग्रंथों में इसकी व्याख्या करते हुए कहा गया है कि शिव का अनादि अनंत व अखंड स्वरूप का तेज ही पाँच स्वरूपों में विभिन्न ज्योति प्रज्जवलित किए हुए है-गणपति, गणतंत्र के अधिष्ठाता एवं रिद्धि-सिद्धि प्रदाता, ज्योर्तिलिंग शिवम के प्रतीक, शिवा अन्नपूर्ण स्वरूपा, श्रीहरि विष्णु सत्य के प्रतिष्ठाता, भुवन भास्कर तमस विनाशक, प्रकाश प्रदाता, शक्ति तथा उफर्जा दाता, इनकी सबकी पूजा सर्वप्रथम की जाती है, पंच देवेभ्यो नमः। इस प्रकार अनुष्ठान के मंगल विधन में सत्यम, शिवम और सुंदरम की प्रतिष्ठा की जाती है। फलतः आदि अनादि ब्रह्म की परिकल्पना सनातन संस्कृति में निगम आगम दोनों को प्रमाण मानकर ही की गई है और कहा गया है कि भगवान शंकर परम वैष्णव व वैष्णवाचार्य हैं तथा भगवान विष्णु भी परम शिव तथा शिवाचार्य हैं-'सेवक स्वामी सखा सिय पी के' मुख्यतः शिव के दश व्रत हैं, जिन्हें दश शैव व्रत कहा जाता है। उनमें सोमवारी व्रत सबसे श्रेष्ठ है। वैसे तो सभी देवी-देवताओं की मूर्तियों की पूजा की जाती है किन्तु शिव की मूर्ति व लिंग दोनों की पूजा की जाती है। इनकी पूजा बिल्व पत्र पुष्प के साथ जल व दूध से अभिषेक करते हुए ओम नमः शिवाय की ध्वनि से की जाती है। श्रावण मास में कांवरिया तीर्थ यात्री काधे पर रंग-बिरंगे कावड़ लेकर पैदल चलकर पवित्र तीर्थों व नदियों के जल से शिवलिंग का अभिषेक करते हैं। अन्य देवी-देवताओं के मंदिरों में भक्तजन दूर से ही उनकी पूजा अर्चना दर्शन आदि कर सकते हैं। जबकि शिव मंदिर में भक्तजन निकट से शिव की पूजा स्वयं ही जल तथा बिल्व पत्र चढ़ाकर कर सकते हैं। शिव की पूजा विधि अत्यंत सरल होने के कारण शिव भारत के सबसे अधिक लोकप्रिय देवता हैं तथा सबसे अधिक शिव मंदिर प्रत्येक गाँव, नगर में स्थापित हैं। जहाँ प्रतिदिन अधिकांश भक्तों द्वारा पूजा की जाती है। ऐसे देवाधिदेव महादेव को शत-शत् नमस्कार।

पालतू जानवर रखने से पहले, हो जाएं सावधान

शौक और स्टेटस का परिचायक–पालतू जानवर

सोनी राय

वो हाथों से बाल को पकड़ना, हर काम में आगे–आगे चलना, अपनी भावनाओं को भौंहों से व्यक्त करना, दौड़–दौड़ कर अपनी पूछों से मुंह को छूना, भला किसे पसंद नहीं है, उनकी मटकती चाल जो आए दिन हमारे पालतू जानवर हमें रिझाने के लिए करते हैं, उनकी चाल का जवाब नहीं क्योंकि वे हैं हमारे खास....

नवीन शर्मा जो कि एक मल्टीनेशनल कंपनी में उच्च पद पर कार्यरत हैं। वे लगभग एक सप्ताह एक हॉस्पिटल में भर्ती थे क्योंकि उन्हें कुछ एलर्जी हो गई थी। जिसके बाद डॉक्टर ने उन्हें पूरी तरह से आराम की सलाह दी। जब डॉक्टर ने उन्हें एलर्जी का कारण बताया तो उनके पैरों तले जमीन खिसक गई क्योंकि यह एलर्जी उनके पालतु कुत्ते से हुई थी। वैसे तो उनका डॉगी प्रिंस, जिसके बिना वह एक पल नहीं रह पाते थे, अब उन्हें उसके बिना सात दिनों तक दूर रहना पड़ा। दरअसल छः महीने पहले वे अपने दोस्त के यहां से एक कुत्ता लेकर आए थे। शर्मा ने बताया कि शुरूआत में मुझे छींके आने लगीं तो इसे मौसमी बीमारी समझकर मैंने नजरअंदाज कर दिया। लेकिन जब ये लक्षण दिनों दिन बढ़ने लगे तो मैंने डॉक्टर को दिखाया। डॉक्टर ने मुझसे पहला सवाल यही पूछा कि क्या मेरे घर में कोई पालतू जानवर है? तभी मुझे एहसास हुआ कि इन परेशानियों के पीछे मेरा कुत्ता हो सकता है।

शर्मा को हॉस्पिटल से डिस्चार्ज हुए दो सप्ताह हो गए हैं और वे अब काम पर भी जाने लगे हैं, दरअसल देखा जाए तो यह सही है कि कभी–कभी घर में पाले जाने वाले जानवर हमारे लिए बीमारियां भी लेकर आ जाते हैं, विशेषज्ञों के अनुसार हम घरों में अपने बुजुर्ग लोगों को अक्सर खांसते, छींकते, बंद नाक, मुंह से सांस लेते हुए देखते हैं। कई ऐसे मामलों में इसके पीछे आपके द्वारा पाले हुए जानवर भी इसका एक बड़ा कारण हो सकते हैं।

विभिन्न तरह की एलर्जी के अलावा ये पालतू जानवर अन्य घातक समस्याओं को भी जन्म दे सकते हैं जैसे पैरासिटिक संक्रमणों का जमावड़ा जो कि शरीर में प्रवेश कर एक गांठ का रूप ले लेता है, समय रहते इसका निदान न हो तो मरीज की जान भी जा सकती है, यदि निदान हो जाए तो पीड़ित सर्जरी करानी पड़ सकती है यह एक प्रकार की अवस्था है जिसे टेपवोर्म के नाम से जाना जाता है यह बीमारियां कुत्तों द्वारा मनुष्यों में ट्रांसमिट होती हैं, आगे चलकर ये एक विशाल गांठ का रूप ले लेती हैं जो कि जानलेवा भी साबित हो सकती है। दरअसल कुत्ते व बिल्लियों के इंटेस्टाइन में टेपवोर्म मौजूद होते हैं जो कि अक्सर उनके शरीर में भोजन द्वारा रिएक्ट करने पर भी पैदा हो सकते हैं और अगर कोई मनुष्य उसके संपर्क में आए तो वह इस बीमारी से पीड़ित हो सकता है।

हालांकि यह मिथ्या है कि सिर्फ पोर्क खाने से ही गांठे बनती हैं, ऐसा शत–प्रतिशत सत्य नहीं हैं, विशेषज्ञों के अनुसार यदि पालतू जानवरों की सही ढंग से साफ–सफाई न की जाए व उनके स्वास्थ्य का ख्याल न रखा जाए तो उन्हें पालने वाले भी खतरे में आ सकते हैं। जिन लोगों के शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कम होती है, जैसे छोटे बच्चे, बुजुर्ग, किसी बीमारी से पीड़ित, कीमोथैरेपी करा रहे लोग आदि इन सब समस्याओं की चपेट में जल्दी आते हैं, ऐसे लोगों को अपने पालतू जानवर से अधिक दोस्ती नहीं बढ़ानी चाहिए, ऐसे में विशेषज्ञ यह सुझाते हैं कि यदि आप पालतू जानवर पाल रहे हैं खासकर कुत्ते या बिल्ली, तो उने रखरखाव की जानकारी को बढ़ाएं व साफ सफाई का अच्छी तरह से ध्यान रखें।

कुछ खास टिप्स-

○ उन्हें नहलाने या साफ करते समय दस्ताने पहनें।

○ जब भी आप उनके मल मूत्र को साफ करें तो ध्यान दें कि उसके संपर्क में न आने पाएं।

○ पालूत जानवर बैक्टीरियल, पैरासिटिक, फंगल व वायरल संक्रमण फैला सकते हैं।

○ अपने पालतू जानवर और आसपास के माहौल को साफ सुथरा रखें।

○ जानवरों को छूने के बाद व खाना खाने से पहले अपने हाथों को अच्छी तरह से धोएं।

○ गार्डेनिंग करते समय व कच्चा मीट आदि छूने के बाद हाथ धोएं।

○ फल व सब्जियां इस्तेमाल में लाने से पहले उन्हें अच्छे से धोलें।

○ अपने पालतू जानवरों की अच्छी तरह से जांच कराएं।

○ अपने बीमार पालतू जानवरों का उपचार अच्छे डॉक्टर से करवाएं।

○ अगर सही मायने में पालतू जानवर रखने का शौक है तो उसका रुटीन चेकअप जरूर कराएं।

○ इसके साथ ही उन्हें आवश्यक टीकाकरण भी जरूर करवाएं।

○ अपने जानवरों से मौखिक संपर्क में न आएं।

○ जानवरों को जितना हो सके घर के भीतर ही रखने का प्रयास करें।

○ अगर आप के जानवर ने आप को काट लिया है तो तुरंत डॉक्टर को दिखाएं। कतई नजरअंदाज न करें।

○ उनके शेल्टरों को बार–बार साफ करें, किसी प्रकार का कचरा आदि इकट्ठा न होने दें।

○ उन्हें पूरा पका हुआ खाना दें न कि अधपका।

उनकी देखभाल के लिए आजकल मार्केट में वैसे भी काफी सारे प्रोडेक्ट मौजूद हैं जो पालतू जानवरों को और भी स्टाइलिश और फैशनबल तो बनाते ही हैं साथ ही उनके देखभाल शेष पृष्ठ 10 पर

देश का दसवाँ राज्य ओडिशा

१. यह राज्य समुद्र के किनारे पूर्वी भारत में है।

२. इसका नाम पहले उड़ीसा था। सरकारी भाषा उड़िया है।

३. यहां हिन्दी का कोई विरोध नहीं है।

४. ६–६ –२०११ से इसका नया नाम ओड़िशा हो गया है जो उड़िया भाषा के अनुसार है।

५. राजधानी का नाम भुवनेश्वर है।

६. राउरकेला इस्पात का विशाल कारखाना इसी राज्य में है।

७. परमाणु परीक्षण मुख्य रूप से इसी राज्य में किए जाते हैं।

८. नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का जन्म इसी राज्य में हुआ था।

९. स्वर्गीय इंदिरा गांधी ने, गोली लगने से मृत्यु से पूर्व, अन्तिम भाषण इसी राज्य में दिया था। ३०–१०–१९४८ को।

१०. पुरी का विश्व विख्यात जगन्नाथ मन्दिर यहीं है। और भी कई मन्दिर हिन्दू संस्कृति के आधार पर बने हुए हैं जो देखने योग्य हैं।

११. पुजारियों ने इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री होते हुए भी मन्दिर में प्रवेश नहीं करने दिया था। उनका कहना था कि वे हिन्दू नहीं है बल्कि पारसी हैं। मन्दिर में अहिन्दुओं का प्रवेश वर्जित है।

१२. जून–जुलाई में वार्षिक रथ यात्रा जोर शोर से निकाली जाती है जो कई किलोमीटर लम्बी होती है। इसकी व्यापक तैयारियां कई महीने पहले शुरु हो जाती हैं।

१३. राज्य अति पिछड़ा और गरीब है। ईसाई मिशनरियों ने आदिवासियों की सेवा करने की आड़ में उनका धर्म परिवर्तन करना शुरू कर दिया था जो अभी भी जारी है।

१४. राज्य सरकार ने धर्म परिवर्तन को रोकने के लिए कुछ सख्त कदम उठाए हैं।

१५. एक आस्ट्रेलिया के पादरी और उसके दोनों लड़कों को जिन्दा जला दिया था जो जीप में बैठे हुए थे।

१६. राज्य में बजरंग दल–धर्म जागरण समिति–विश्व हिन्दू परिषद सक्रिय होकर कार्य कर रही हैं जिसकी सराहना की जाती है।

१७. जिला केन्द्रापड़ा में गुरूकुल दयानन्द कल्याण आश्रम कई वर्षों से स्वामी विवेकानन्द सरस्वती मेरठ द्वारा चलाया जा रहा है। यहां बच्चों को शिक्षा दी जाती है और शुद्धि भी की जाती हैं। मैंने भी कई बार चैक भेजे हैं।

१८. समुद्री तूफान, बाढ़, अत्यधिक वर्षा से कच्चे पक्के मकानों को क्षति पहुंचती है। फिलहाल बच्चों को अन्य घरों में अस्थायी रूप से ठहराया गया है। नकद अथवा सामान भेजने की अपील समय समय पर सुदर्शन शास्त्री, मंत्री द्वारा मोबाइल ०६६३८१७५८१६ द्वारा की जाती है। मैने भी कई बार चैक भेजकर सहयोग किया है।

१९. जगन्नाथ मंदिर के पास ७०००० एकड़ भूमि है। इस भूमि को राज्य सरकार अधिगृहित करके बेचना चाहती है जिसकी ओर ध्यान दिया जाना चाहिए ताकि राज्य सरकार सफल न हो।

२०. ओडिशा की सीमा तेलंगाना–छत्तीसगढ़–झारखण्ड और पश्चिम बंगाल से मिलती है।

२१. श्री एम० सी० जमीर इस समय राज्यपाल हैं जो उदारवादी ईसाई धर्मी कांग्रेसी हैं। वे कई वर्षों तक नागालैंड के मुख्यमंत्री रहे थे।

२२. राज्य में कांग्रेस, बीजू जनता दल, भाजपा प्रमुख राजनीतिक दल हैं।

२३. मुम्बई निवासी मेरे ममेरे भाई और मामी ने पंजाबी भाषी होते हुए, अपनी पुत्री का रिश्ता, ओडिशा के परिवार से, उड़िया भाषी लड़के से करके, अर्न्तजातीय और अर्न्तभाषायी आदर्श प्रस्तुत किया है जिसके लिए मैं उन्हें हार्दिक बधाई देता हूं और रिश्ता सफल रहने की कामना करता हूं। महर्षि दयानन्द, भाई परमानन्द और वीर सावरकर जैसे नेता गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर रिश्ते करना पसंद करते थे।

इन्द्र देव गुलाटी

नेताजी सुभाष बोष पर विश्वास पाटिल का राजनीतिक उपन्यास 'महानायक' वर्तमान विषाक्त वातावरण में १९९९ में प्रकाशित उपन्यास की प्रासंगिकता

हरिकृष्ण निगम

वैसे तो आजकल नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के जीवन या कई प्रसिद्ध अंग्रेज लेखकों व पश्चिमी पत्रकारों के दुर्लभ दस्तावेजों सहित अनेक तथ्यपरक और रोचक ग्रंथ उपलब्ध हैं और लगातार सूचना अधिकार अधिनियम वेफ अन्तर्गत अनेक उत्सुक और जानकार भारतीयों ने उनकी मृत्यु के बारे में सरकार से अधिकाधिक जानकारी उपलब्ध कर ली है जिसके द्वारा कई पिछले जाँच आयोगों के निष्कर्षों के बावजूद उसकी अक्षमता के साथ शीर्षस्थ राजनेताओं के दुराग्रहों का भी पर्दाफाश हो चुका है, पर सन् १९९९ में उन्हीं पर प्रकाशित एक उपन्यास ''महानायक'' जो विश्वास पाटिल ने लिखा था, उसे विस्मृत नहीं किया जा सकता है। एक समय प्रसिद्ध लेखक अनुज धर के शोधपूर्ण ग्रंथों व फारवर्ड ब्लॉक के कुछ सांसदों के साथ-साथ नेताजी के अपने परिवार के कुछ सदस्यों ने अपनी कृतियों पर सरकारी विज्ञप्तियों पर जो संशय उठाया था उससे देश के सर्वाधिक महत्व के राजनेता भी बगलें झाँकते दीखते थे।

पर जहाँ तक नेताजी के जीवन पर आधारित विश्वास पाटिल के मराठी उपन्यास महानायक के हिन्दी अनुवाद जो सितम्बर ९९ में प्रकाशित हुआ था उसके राजनीतिक महत्त्व को आज के परिप्रेक्ष्य में कई कारणों से याद किया जाता है। कहने को तो यह एक उपन्यास है पर लेखक ने स्वतंत्रता आन्दोलन के राजनीतिक तथ्य पर शोध करके 'महानायक' की अवधारणा को भी स्थापित किया था।

आज जबकि देश को आजादी मिले छह दशक से उपर हो चुके हैं चुनावों के समय राजनेताओं व छोटे-बड़े अनेक राजनीतिक दलों ने अपने विरोधियों या प्रधनमंत्री पद के प्रत्याशी नरेन्द्र मोदी के लिए घृणित, अभद्र, अश्लील शब्दावली प्रयुक्त की उसे पश्चिमी देश भारत जैसे कथित प्रजातंत्र का नया कलंक कह रहे हैं। जहाँ देश के संविधान को ही कलंकित करने का निर्लज्ज प्रयास किया गया। हमारे देश को इस तरह के नेताओं के विषवमन के कारण जिनमें दिग्विजय सिंह, बेनीप्रसाद वर्मा, सलमान खुर्शीद, मणिशंकर अय्यर, कपिल सिब्बल, आजम खान जैसे कुछ अग्रगण्य नाम हैं संविधान, शिक्षित व सभ्य समाज को जाहिलों के देश में रूपांतरित करने का प्रयास भी विश्वभर में किया गया है। इस परिप्रेक्ष्य में सुभाषचंद्र बोष को विशेष रूप से याद करना प्रासंगिक है क्योंकि अपने समय के सर्वाधिक प्रतिष्ठित शीर्षस्थ कांग्रेसी नेता व साम्यवादी उन्हें 'हिटलर का गुलाम', 'वोजो का कुत्ता', फांसीवादी और 'नाजी' भी कहकर यंत्रणा देने से नहीं चूके थे। महात्मा गाँधी, जवाहर लाल नेहरू, वल्लभभाई पटेल जैसे दिग्गज नेताओं के बीच आजादी के लिए अपना खून देने व सर्वसाधारण से हक से माँगने के लिए अपने हठ संकल्प और असाधारण साहस के कारण, सुभाष भारत में ही नहीं पूरे विश्व में अनूठे नेतृत्वकर्ता के रूप में पहचाने गए जिनके सामने आज भी तत्कालीन सर्वाधिक महत्त्व के नेता कभी-कभी संकीर्ण व स्वार्थी प्रतीत होते हैं। स्वाधीनता-प्राप्ति के लिए उदारमना सुभाष ने गाँधी जी के कांग्रेस अधिवेशनों में कुटिल मन्तव्य को जानते हुए भी उनको प्रेरणास्रोत ही माना, लेकिन अपना रास्ता खुलकर स्वयं प्रशस्त किया। उस जवाहरलाल नेहरू को जो सुभाष को अपने लिए निजी चुनौती के रूप में आजीवन देखते रहे, उनके प्रति उन्होंने मित्रता का अपार स्नेह बरसाया। लेकिन सुभाष बाबू ने अपनी राष्ट्रभक्ति और राजनीतिक दृढ़ विचारों के पर्वत को पिघलने नहीं दिया।

यदि हम उनके अनेक भाषणों और वक्तव्यों का बारीकी से अध्ययन करें तो एक समय उन्होंने रूस के प्रगतिशील समाजवादी सिद्धान्तों को आदर्श माना था। पर जहाँ तक देश की अपनी आजादी की लड़ाई का प्रश्न था उन्होंने साम्यवाद के घोर विरोधी शासकों हिटलर और मुसोलिनी से सहयोग लेने में कोई संकोच नहीं किया। आततायी ब्रिटिश साम्राज्य के शत्रु के शत्रु से अपने देश को किसी भी हालत में मित्र बनाने की रणनीति आज भी हमारे पड़ोसी देश दशकों से बनाते हैं पर यदि दूरदर्शी सुभाष बोस ने ऐसा किया तब वह हमारे देश के निजी महत्त्वाकांक्षी नेता अपनी छवि में बाधा मानें तो उनका क्या दोष था? उन्होंने अपने लक्ष्य के लिए हर प्रतिकूल धारा के बीच अपनी नैया खेने में कोई हिचकिचाहट महसूस नहीं की। जैसे भारत के अन्दर की विपरीत परिस्थितियों का पूरी शिष्टता के साथ उन्होंने अन्य कांग्रेसी व साम्यवादियों का मुकाबला किया था वह अनूठा था क्योंकि मत-भिन्नता को उन्होंने आज की राजनीति जैसी घृणा और विषाक्त अश्लीलता का रूप नहीं दिया था। क्या आज की पीढ़ी को इस बात का अंदाजा होगा कि सुभाष बाबू को निष्कासित करवाने वाले महात्मा गाँधी व उनकी पत्नी कस्तूरबा ''माँ'' का दुलार पाने के लिए उनके चरणों में बैठने में एक क्षण के लिए उन्होंने संकोच नहीं किया। इस संदर्भ में विलास पाटिल की कृति में सुभाष बाबू को 'महानायक' की संज्ञा देना सर्वथा उचित था।

विलास पाटिल की समीचित कृति की आज की राजनीतिक स्थिति में प्रासंगिकता इसलिए भी बढ़ जाती है कि सुभाष बाबू की स्थिति उस समय की तिलक, गाँधी और नेहरू व पटेल आदि की अखिल भारतीय छवि के सामने अपेक्षाकृत उतनी नहीं उभरी थी। पर विडम्बना यह है कि आज सन २०१४ के आते-आते सभी दलों के अनवरत बकवास करने वाले नेता उन्हीं नेहरू, गाँधी के बृहद चित्रों की पृष्ठभूमि में बैठकर वर्तमान नेता उनके जीवनमूल्यों व राजनीतिक लक्ष्मण-रेखाओं का रंचमात्र भी पालन करते नहीं दिखाई देते। देश का जब आधुनिक इतिहास लिखा जाएगा तो संविधान का हर मौके पर उल्लंघन करने वाले नेताओं को शायद भावी पीढ़ी क्षमा नहीं करेगी।

कौरव-पांडवों के रूपों में महाभारत के खलनायकों को आज भी हर भारतीय उदाहरणों के रूप में पहचानने का आदी है। वे भी अपने सारे षड्यंत्रों के बावजूद अपने सामने होने पर दुश्मन के आदर-सत्कार के अथवा दुःख में संवेदना के दो वाक्य बोलते सुनाई पड़ते हैं, लेकिन वर्तमान चुनावी राजनीति में जहरीले बाणों के अतिरिक्त उनके बीच कुछ नहीं बचा है। एक टिप्पणीकार के अनुसार कई बार तो ऐसा लगता है कि राजनीतिक बारूद की दमघोंटू दुर्गन्ध से पूरे समास की श्वास नली बन्द हो रही है। पढ़े-लिखे नेताओं व वर्ग सभी बुद्धिजीवियों की हठधर्मिता प्रजातंत्र की इस छाया में अपेक्षाकृत अधिक कुटिल भूमिका निभा रही है। चरित्र-हनन की प्रतियोगिता शब्दकोश में से महानायक का शब्द ही जैसे कहीं गायब कर रही हो। यह बात अलग है कि सत्तारूढ़ और प्रतिपक्ष खेमों में नेहरू या पटेल के उत्तराधिकारी अर्थात् सुभाष बाबू की तरह क्रांतिकारी होने का दावा करते हुए महानायक की अभिलाषा रखने वाले नेता गली-गली में घूम रहे हैं। पर क्या अपने को महानायक सिद्ध करने की परीक्षा देने में कोई सक्षम है? अब तो हर पार्टी का नेता व उसका कार्यकर्ता हर प्रत्याशी पर्चा भरने के पहले ही उसकी कीमत वसूलने के लिए तत्पर रहता है। लोकतंत्र की अपार शक्ति सिर्फ निर्बोध जनता को बेवकूफ बनाने की क्षमता में सिमट कर रह गई है।

कुछ भी हो विश्वास पाटिल के 'महानायक' का हिन्दी संस्करण, जो जुलाई १९९९ में आज से यद्यपि १५ वर्ष पहले प्रकाशित हुआ था, जो उनके जीवन के विविध घटनाक्रमों को लिपिबद्ध करने के साथ-साथ आज की विषाक्त राजनीति में एक सार्थक व प्रासंगिक संकेत देता है, इसलिए पठनीय एवं सग्रहणीय हो सकता है।

एडजस्टमेंट, करप्शन और संसदीय मर्यादा

मिथिलेश सिंह

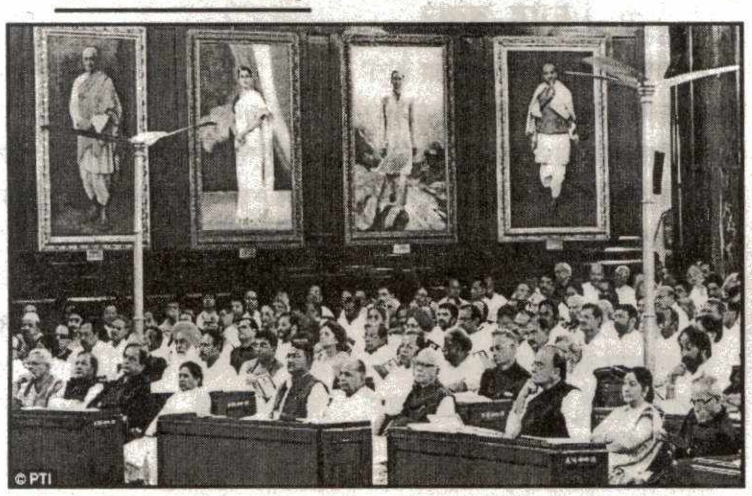

© PTI

संसद के चालू सत्र में मध्य प्रदेश के कटनी से दिल्ली आए कुछ बच्चे संसद की कार्यवाही देखकर निराश हो गए थे। स्कूल की शिक्षिका की इस बाबत प्रतिक्रिया थी कि 'हम इन बच्चों को इतनी दूर से यहां संसद की कार्यवाही दिखाने लाए, संसद चली नहीं। ये तकरीबन हर रोज की कहानी है। जो लोग संसद की कार्यवाही देखने आते हैं उन्हें हंगामा ही नसीब होता है और वो मायूस होकर लौट जाते हैं। यह तो रही संसद से रूबरू होने वाली आम जनता का हाल, जो यह बताने के लिए पर्याप्त है कि हमारी संसदीय व्यवस्था किस दिशा में और किस दशा में गुजर रही है। उम्मीदों के अनुरूप संसद का वर्तमान सत्र हंगामों से लबरेज है। भ्रष्टाचार के आरोपों के कारण इतिहास के अपने सबसे बुरे दौर में आ खड़ी हुई कांग्रेस ने संसद में भाजपा का विरोध करते हुए वह सब कुछ कर रही है, जो वह कर सकती है। संसद को ठप्प करना तो खैर, सांसदों का जन्मसिद्ध अधिकार है, लेकिन इस बार संसद में धरना, काली पट्टी बांधकर रोष जताना जैसे कार्य भी बेहद तेजी से देखने को मिल रहे हैं, शायद किसी एक्शन फिल्म की तरह। सदन की कार्यवाही के दौरान कांग्रेसी सांसदों ने केंद्र सरकार के खिलाफ तख्तियां लहराई, तब लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन ने इस पर नाराजगी जताते हुए कहा कि सदन में पोस्टर, बैनर, झंडे दिखाना और काली पट्टी बांधकर आना सदन की गरिमा को आहत करने वाला है और वह ऐसे सदस्यों के खिलाफ कार्रवाई करने को मजबूर होंगी। खैर, कार्रवाई से डरता कौन है, क्योंकि यदि कार्रवाई का ही डर होता तो संसद में स्प्रे फेंकना, नोटों की गड्डी लहराना और मारपीट करने का दृश्य जनता को क्यों देखना पड़ता। संसद के इसी जुलाई-सत्र में कुछ और सम्बंधित खबरें आयीं हैं, जिन्हें समझना दिलचस्प होगा। अपने ऊपर हो रहे हमलों से आहत विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने अपने ट्विटर अकाउंट से ट्वीट किया कि 'कोयला घोटाले के एक आरोपी को राजनयिक पासपोर्ट दिलाने के लिए कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता ने मेरे ऊपर दबाव डाला। वह तो अच्छा हुआ कि सुषमाजी का मानवीय स्वभाव यहाँ नहीं जागा, अन्यथा ललित मोदी की तरह उन्हें एक और आरोप से दो-चार होना पड़ता। अब यहाँ, काउंटर प्रश्न यह भी उठता है कि यदि सुषमा स्वराज के ऊपर कोई ऐसा दबाव था तो उन्होंने खुलासा करने में इतनी देरी क्यों की? आखिर, यह किस प्रकार का तालमेल है! भाजपा ने कांग्रेस के चुप न रहने पर एक और खुलासा किया कि कांग्रेस सरकार के सीएम हरीश रावत भी भ्रष्टाचार में संलिप्त हैं। भाजपा ने रावत के निजी सचिव के खिलाफ एक स्टिंग जारी किया, जिसमें पार्टी ने आरोप लगाया है, कि मुख्यमंत्री ने पीएस के साथ मिलकर आबकारी नियमों में बदलाव करते हुए शराब ठेका देने की प्रक्रिया में बिचौलियों को शामिल किया और शराब कारोबारियों को फायदा पहुंचाने का काम किया। प्रश्न यहाँ भी वही है कि स्टिंग जारी करने के लिए अब तक इन्तेजार क्यों किया गया? क्या इसे भी दबाव बनाने की रणनीति मानी जा सकती है कि यदि कांग्रेस ने सुषमा, शिवराज और वसुंधरा पर अपना विपक्ष हठ नहीं छोड़ा तो भाजपा के तरकश में भी कई तीर हैं, जिसका एकाध नमूना ही उसने दिखाया है! आगे जरूरत पड़ी तो और! चलिए तालमेल तो संसदीय व्यवस्था का अभिन्न अंग बन चुका है, लेकिन इस प्रकार के तालमेल से लोकतान्त्रिक व्यवस्था को ही नुकसान पहुँचता है लगातार, इस बात से भला किसे इंकार हो सकता है! ऐसी स्थिति में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का चुनाव-पूर्व वह वक्तव्य मिथ्या ही नजर आता है, जिसमें वह कहा करते थे कि भ्रष्टाचार पर 'जीरो टॉलरेंस' की नीति अपनाई जाएगी, लेकिन इस संसद-सत्र में तो तालमेल के प्रयास ही ज्यादे नजर आते हैं। इसी सत्र में दोनों पार्टियों से एक-एक खबरों ने ध्यान खींचा, जिसका जिक्र बंद आँखों को खोलने वाला है। कांग्रेसी नेता शशि थरूर अपनी पार्टी द्वारा बेवजह किये जा रहे हंगामे से आहत थे, जिसका विरोध उन्होंने यह कहकर किया कि मात्र ४४ सांसदों से संसद को लगातार ठप्प रखने से गलत सन्देश जा रहा है। उनका कहना था कि उनको पार्टी हाई कमांड से तगड़ी फटकार मिली। कांग्रेस अध्यक्षा सोनिया गाधी ने कहा "आप हमेशा ऐसे ही करते हो, ये आपकी आदत हो गई है। अब थरूर ने क्या गलत किया, यह तो सोनिया गांधी ही समझ सकती हैं। खैर, इसके बाद बिचारे थरूर ने चुप रहना ही बेहतर समझा। ऐसी ही एक खबर भाजपा खेमे से भी आयी, जब उसके वरिष्ठतम नेताओं में से एक शांता कुमार ने पार्टी को एक पत्र लिखा और कहा कि व्यापम जैसे घोटालों से पार्टी की बदनामी हो रही है। शांता कुमार ने भाजपा में आतंरिक संवाद न होने के मुद्दे पर भी अपनी राय रखी थी। उनको भी डांट पड़ी और मीडिया से दूर रहने की नसीहत मिली सो अलग! अब सवाल जस का तस है कि लोकतंत्र का जिम्मा उठाने वाली बड़ी राजनीतिक पार्टियां जब अपनी ही पार्टी में विरोध की छोटी आवाजों को दबाने का कार्य करेंगी और एक दुसरे से गलत तरीके से एडजस्टमेंट करने की कोशिश करेंगी तो जनता, पारदर्शिता और लोकतंत्र की उम्मीद करे भी तो कैसे? इस पूरी प्रक्रिया में संसद-सत्र पर करोड़ों रूपये फूंककर, वक्त की बर्बादी का प्रश्न तो जस का तस है ही। उम्मीद की जानी चाहिए कि जैसे-तैसे, एडजस्टमेंट से ही सही, संसद कार्य को सुचारू रूप से चलने दिया जायेगा और जरूरी बिलों को पास किया जायेगा। वैसे, जब सबकुछ तालमेल से ही होना है तो बेहतर रहता कि सत्र शुरू होने से पहले ही यह तालमेल हो जाता! तब कम से कम जनता को तमाशा तो नहीं देखना पड़ता और न ही वक्त की बर्बादी ही होती! लोकतंत्र की परिभाषा देते हुए कभी अब्राहम लिंकन ने कहा था कि जनता का, जनता के द्वारा, जनता के लिए किया जाने वाला शासन ही लोकतंत्र है। लेकिन, संसद-सत्रों के लगातार खलल और गलत एडजस्टमेंट को देखकर लगता है लोकतंत्र की नयी परिभाषा ही बना देनी चाहिए, जिसमें नेता का, नेता के द्वारा, नेता के लिए ही सब किया जाता है। उम्मीद पर दुनिया कायम है, और जनता को अपने प्रधान सेवक से काफी उम्मीदें बंधी हुई हैं। जनता निराश भी नहीं होगी, अगर सभी मामलों की ठीक तरीके से जांच की जाती है और दोषियों को उनके पदों से तुरंत हटाया जाता है। लेकिन, अगर एडजस्टमेंट की ही कोशिशें की जाती रही तो फिर व्यवस्था परिवर्तन का सपना, दिवास्वप्न ही साबित होगा।

मदनलाल ढींगरा की पुण्यतिथि पर

मदन लाल ढींगरा का जन्म १८ सितंबर, १८८३ (जन्मतिथि का कोई ठोस सबूत नहीं है) एक हिंदू खत्री परिवार में हुआ था। उनके पिता दित्ता मल एक मशहूर और धनी सिविल सर्जन थे। घर में पैसे की कोई कमी नहीं थी और शिक्षा के लिहाज से भी उनकी स्थिति बेहद मजबूत थी। मदनलाल ढींगरा का परिवार शुरुआत में अंग्रेजी हुकूमत की तारीफ करता था पर मदनलाल को यह पसंद नहीं था। जब मदनलाल को भारतीय स्वतंत्रता सम्बन्धी क्रान्ति के आरोप में लाहौर के एक कॉलेज से निकाल दिया गया तो परिवार ने मदनलाल से नाता तोड़ लिया। मदनलाल को अपना खर्चा चलाने के लिए क्लर्क, तांगा-चालक और एक कारखाने में श्रमिक के रूप में काम करना पड़ा। वहां उन्होंने एक यूनियन (संघ) बनाने की कोशिश की किन्तु वहां से भी उन्हें निकाल दिया गया। कुछ दिन उन्होंने मुंबई में भी काम किया। अपने बड़े भाई की सलाह पर वे सन् १९०६ में उच्च शिक्षा के लिये इंग्लैण्ड गए जहां यूनिवर्सिटी कालेज लन्दन में यांत्रिक प्रौद्योगिकी में प्रवेश लिया। इसके लिये उन्हें उनके बड़े भाई एवं इंग्लैण्ड के कुछ राष्ट्रवादी कार्यकर्ताओं से आर्थिक मदद मिली।

मदनलाल और वीर सावरकर : इंडिया हाउस नामक एक संगठन में, जो उन दिनों भारतीय विद्यार्थियों के राजनैतिक क्रियाकलापों का केन्द्र था, वहां मदनलाल ढींगरा भारत के प्रख्यात राष्ट्रवादी विनायक दामोदर सावरकर एवं श्यामजी कृष्णवर्मा के सम्पर्क में आए। उन दिनों सावरकर जी बम बनाने और अन्य शस्त्रों को हासिल करने की कोशिशें कर रहे थे। सावरकर जी मदनलाल की क्रांतिकारी भावना और उनकी इच्छाशक्ति से बहुत प्रभावित हुए। सावरकर ने ही मदनलाल को अभिनव भारत मण्डल का सदस्य बनवाया और हथियार चलाने का प्रशिक्षण दिया। इसके बाद मदनलाल, वीर सावरकर के साथ मिलकर काम करने लगे। कई लोग मानते हैं कि उन्होंने वाइसराय लार्ड कर्जन को भी मारने की कोशिश की थी पर वह कामयाब नहीं हो पाए थे। इसके बाद सावरकर जी ने मदनलाल को साथ लेकर कर्जन वाईली को मारने की योजना बनाई और मदनलाल को साफ कह दिया गया कि इस बार किसी भी हाल में सफल होना है।

मदनलाल द्वारा कर्जन वाईली की हत्या : ०१ जुलाई, १९०६ की शाम को इण्डियन नेशनल एसोसिएशन के वार्षिकोत्सव में भाग लेने के लिये भारी संख्या में भारतीय और अंग्रेज इकट्ठे हुए। इसमें सर कर्जन वायली भी शामिल थे। इसी दौरान मदनलाल कर्जन वाईली से कुछ खास बात करने के बहाने उनके समीप पहुंचे और उन्हें गोली मार दी। मदन लाल के हाथों सर कर्जन वायली के साथ उनको बचाने आए पारसी डॉक्टर कावसजी लालकाका की भी मौत हो गई। मदनलाल ने मौके से भागने की जगह आत्म-हत्या का विचार किया पर इससे पहले ही उन्हें पकड़ लिया गया। कर्जन वाईली और पारसी डॉक्टर कावसजी शेष पृष्ठ 11 पर

शिक्षा में सर्वत्र व्याप्त है व्यापम

✍ विनोद बब्बर

राजनीति का अपना चरित्र है। सत्ता में आने पर सभी अपनों को उपकृत करते हैं जबकि विपक्ष कोसता हैं। आरोप–प्रत्यारोप होते है। सत्ता परिवर्तन हो जाने पर भी मात्र भूमिकाएं बदलती हैं शेष यथावत रहता है। पिछले दिनों मध्यप्रदेश में हुए 'व्यापम' को लेकर खूब शोर हुआ। जबकि तथ्य यह है कि परीक्षाओं में गड़बड़ी और भ्रष्टाचार का प्रतीक बन चुका 'व्यापम' केवल एक प्रदेश तक सीमित नहीं है। हालांकि उच्चतम न्यायालय ने इसकी सीबीआई जांच के आदेश दिये हैं परंतु फिलहाल मामला ठण्डा होने के कोई आसार नहीं है।

'व्यापम' के सर्वत्र व्याप्त होने की पुष्टि करते ताजा समाचार के अनुसार मध्यप्रदेश के एक एसडीएम ने अपने दौरे के अवसर पर एक शिक्षक से स्कूल का नाम ब्लैकबोर्ड पर लिखने को कहा तो उसने 'गवर्नमेंट मिडिल स्कूल' में गवर्नमेंट गलत लिखा। जबकि उसी कक्षा के एक बच्चे ने उसे सही लिखा। एक स्कूल की अध्यापिका से 'मिडिल' की स्पेलिंग पूछी गई तो उसने हाथ जोड़ लिए। केवल मध्यप्रदेश ही क्यों, कुछ समय पूर्व जम्मू कश्मीर हाईकोर्ट ने भी ऐसा ही एक मामला सामने आया। दक्षिण कश्मीर के एक अध्यापक की नियुक्ति को चुनौती देने वाली याचिका की सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता ने उसपर 'अयोग्यता' का आरोप लगाया तो कोर्ट ने उसे अंग्रेजी से उर्दू और उर्दू से अंग्रेजी में अनुवाद के लिए एक आसान की पंक्ति दी जिसका वह अनुवाद नहीं कर सका। और तो और कश्मीर का वह अध्यापक बेहद आसान सी परीक्षा में पास नहीं हो सका जब वह 'गाय' पर निबंध भी नहीं लिख सका था। गत शिक्षा सत्र की समाप्ति पर बिहार में सामूहिक नकल के चित्रों ने सभी को शर्मसार किया तो हाल ही में १४०० प्राथमिक टीचरों के इस्तीफे ने सभी को चौकाया जबकि उन्होंने किसी असंतोष के कारण ऐसा नहीं किया बल्कि कानूनी कार्रवाई से बचने के लिए ऐसा किया क्योंकि पटना उच्च न्यायालय ने एक आदेश में कहा था कि फर्जी डिग्री से नौकरी पाने वाले टीचर अगर इस्तीफा देते हैं तो उनके खिलाफ कोई नहीं कार्रवाई की जाएगी। ऐसा न करने वाले फर्जी डिग्रीधारी अध्यापकों से वेतन और भत्ते भी वसूले जाने सहित कड़ी कार्यवाही होगी। शेष राज्यों में भी स्थिति इससे बहुत भिन्न नहीं है।

'स्किल इण्डिया' की तैयारी के बावजूद इस बात से कौन इंकार करेगा कि केवल महानगरों में ही नहीं, छोटे नगरों से गांवों तक प्राइवेट स्कूल बहुत तेजी से फल फूल रहे हैं। सरकारें लाख दावा करती रहें पर सरकारी स्कूल शिक्षा के स्तर को कायम नहीं रख सके है। उसमें अध्यापकों से ज्यादा दोष व्यवस्था का है क्योंकि मतदाता सूची निर्माण, मतदान, मतगणना, जनगणना के बाद प्रतिदिन 'मिड डे मिल' बांटने जैसे कार्यों में उन्हें लगाया जाएगा तो इससे बेहतर की आशा ही नहीं की जा सकती। उसपर किसी को फेल न करने की बाध्यता। किसी को बड़े से बड़ा अपराध करने पर भी डांटना मना। क्या ऐसे शिक्षास्तर को ऊँचा उठाया जा सकता है?

हमारे पूर्वज मनीषियों के अनुसार वास्तविक शिक्षा वह है जिससे व्यक्ति के चरित्र का निर्माण हो। वेद मन्त्रों में 'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमयः' का उद्घोष है। तो भर्तृहरी ने नीतिशतक में कहा है– **'शिक्षा विहीन साक्षात् पशुः पुच्छ विषाणहीनः'** यह हमारे विद्वान ऋषियों का तप और ज्ञान था कि प्राचीन समय में हमारा देश शिक्षा का केन्द्र था। दुनिया भर से लोग तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला में अध्ययन के लिए आते थे।

निश्चित रूप से किसी भी समाज को आइना दिखाने का काम शिक्षा ही करती है। अतः कोई भी विकासशील राष्ट्र जो अग्रणीय स्थान पाने का जोश दिखा रहा हो, शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रश्न उठना ही चाहिए। हमारे एक भी विश्वविद्यालय के विश्व रैकिंग में स्थान न पाने को हम पक्षपातपूर्ण बता कर स्वयं को संतुष्ट हो सकते है। परंतु कड़ी परीक्षाओं से गुजरते हुए चुने गए रूड़की आईआईटी के उन ७३ छात्रों के बारे में क्या कहा जाए जिन्हें बहुत खराब प्रदर्शन करने के कारण निकाल दिया गया है। यदि यह भी शिक्षा के स्तर पर हमें जगाने में असफल रहता है तो भगवान भी हमारी मदद नहीं कर सकता। आखिर यह कैसी शिक्षा प्रणाली और कैसा इसका तंत्र है कि उसका सारा जोर योग्यता और ज्ञान पर नहीं अपितु अंकों पर हैं। वस्तुनिष्ठ परीक्षा प्रणाली की सीमाएं सामने आने के बावजूद उसके सुधार की जरूरत पर चर्चा गायब है। दुर्भाग्य की बात है कि व्यापम पर राजनैतिक शोर तो बहुत हुआ लेकिन इन तमाम परिस्थितियों पर कहीं कोई चर्चा तो दूर सुगबुगाहट तक दिखाई नहीं देती।

व्यापम
Madhya Pradesh

दुर्भाग्य की बात है कि पश्चिम का अंधानुसरण करते हुए भी हम किसी जनरल को रक्षामंत्री, डाक्टर को स्वास्थ्य मंत्री, शिक्षाविद् को शिक्षामंत्री का दायित्व देने का बोध नहीं है। इसीलिए राजनीतिक लोग शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने की बातें तो अक्सर करते हैं पर शिक्षा के बाजारीकरण को रोकने पर कभी कोई गंभीरता नहीं दिख सके। निजी और सरकारी स्कूल वर्ग विभाजन का कारण बन रहे हैं। बेशक सभी प्राईवेट स्कूलों का स्तर बहुत अच्छा नहीं है परंतु व्यवस्था समाज के बीच खाई बन रही है। ऐसे में प्रश्न यह है कि यदि केवल अपना नाम लिखना –पढ़ना ही साक्षरता का मापदंड होगा तो शिक्षा के स्तर पर चर्चा होनी भी चाहिए अथवा नहीं।

यह बात से इंकार नहीं कि हमारे यहां का शैक्षणिक परिदृश्य बदला हैं। सरकारी से अधिक निजी विश्वविद्यालयों की बाढ़ सी आई है। हर साल लाखों डाक्टर, इंजीनियर तैयार होते हैं। ल और एमबीए जैसे अनेकानेक कोर्स पास करने वालों की संख्या भी लाखों में होती है। परंतु गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले करोड़ों लोगों के बच्चों का शिक्षा के स्तर क्या है, इसपर चुप्पी क्यों? क्या शिक्षा व उनका जीवन स्तर सुधारे बिना भारत का विकास संभव है?

देश आजादी की अड़सठवीं वर्षगांठ मनाने जा रहा है। क्या हम अपने दिल पर हाथ रखकर इस बात से इंकार कर सकते हैं कि आजतक हम जाति से ऊपर नहीं उठ सके हैं। जनगणना से अधिक जोर जातिगणना के आंकड़ों पर है। साक्षरता से सजातीयता प्रिय होने के कारण शिक्षा के स्तर पर चर्चा की जरूरत महसूस नहीं होती। शायद उन्हें निरक्षर रखकर शासन करने की सोच बदली नहीं है। यह विशेष स्मरणीय है कि सन् १९११ में महान देशभक्त श्री गोपाल कृष्ण गोखले ने मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का बिल पेश किया था तो ग्यारह हजार बड़े जमींदारों के हस्ताक्षरों वाली याचिका में कहा गया था कि 'अगर गरीबों के बच्चे स्कूल जाएंगे तो जमींदारों के खेतों में काम कौन करेगा।'

बेशक स्वतंत्रता के इन वर्षों में शिक्षण संस्थानों की संख्या बढ़ी है। लेकिन सूचना क्रांति के इस दौर में आज भी देश के एक चौथाई स्कूलों में भी कम्प्यूटर उपलब्ध नहीं है। ढेरों पद रिक्त हैं। ऐसे में गुणवत्ता की चिंता करे भी तो कौन? शिक्षा के स्तर पर चर्चा अधूरी और निरर्थक रहेगी यदि हम देश के शिक्षकों की दशा और दिशा को अनदेखा करें। क्या यह सत्य नहीं कि हमारी नई पीढ़ी डाक्टर, इंजीनियर, सीए, आईएएस, आईपीएस, जज, मैजिस्ट्रेट तो बनना चाहती है पर शिक्षक नहीं बनना चाहती। यदि प्राथमिकता नहीं, 'कहीं नहीं तो यहीं सही' की मजबूरी से कोई शिक्षक बनता है तो स्पष्ट है कि समाज और सरकारें शिक्षक के प्रति कहीं अन्याय कर रही है। शिक्षक दिवस आ रहा है। कुछ को पुरस्कार, शेष की प्रशंसा, भविष्य निर्माता का संबोधन होगा। परंतु इतना काफी नहीं है। शिक्षा के धंधे में अमूल–चूल परिवर्तन किये बिना शेष पृष्ठ 11 पर

राजगुरु की कुण्डलियाँ

सोच का संकुचित दायरा

धरम भरम के नाम पर, ऐसा चढ़ा जुनून।
मनुज मनुज को मारकर, बहा रहा है खून।।
बहा रहा है खून, दायरा अक्कल संकरा।
ईश श्रेष्ठ सन्तान, हो गया मुर्गा, बकरा।।
धरम भरम "राजगुरु", हद से बाहर कु–करम।
काफिर–जन का कत्ल, मान रहा अपना धरम।।

प्रकृति की अनदेखी

अनदेखी कर प्रकृति की, उन्नति ऊँची जम्प।
तब तब सूखा पड़ेगा, बाढ़ और भूकम्प।।
बाढ़ और भूकम्प, प्रकृति देती संदेशा।
अनदेखी कर मनुज, भोगता विविध कलेशा।।
चेत चेत "राजगुरु", बघार मत अपनी शेखी।
पद मत मार कुठार, प्रकृति की कर अनदेखी।।

ईश का रहस्य

काया नाशे, सेइये, कितनउ तेल–फुलेल।
भेजा सो ले जाय वह, यही ईश का खेल।।
यही ईश का खेल, खेल उसका वह जाने।
सभी धरे रह जाय, आपके ताने–बाने।।
कितनउ मारो मगज, रहस उसका नहिं पाया।
मिट्टी मिट्टी मिले, "राजगुरु", नाशे काया।।

आचार्य शिवप्रसाद राजभर

STRUCTURAL REFORMS FOR VALUE BASED EDUCATION

✍ Mukul Kanitkar

The state of higher education in Bharat has been crying for reforms right from Independence. There have been several attempts to implement drastic changes in the higher educational machinery. As a result, many diverse institutions have cropped up. The major bulk of college education is still under the State universities, which lack funding, faculty and infrastructure. On the other hand in the last decade, plenty of private colleges and universities have come up all over the country. Some of those have created state-of-the-art infrastructure, but the cost of education has risen exponentially and such facilities are totally out of reach of the middle class students. Even in such costly institutions, there is a dearth of qualified academicians to fill up the faculty.

Apart from these systemic constraints, the most important lacuna of Bharat's higher education setup is total neglect of value based education. When the ghastly cases like brutal assault on Nirbhaya shook the whole nation, the talk for the need for value education in all levels of education gained momentum. Many conferences and seminars have begun coming up and many universities have come forward with value education curricula, while others are attempting co-curricular and extracurricular activities. These are all very important and must be encouraged but the main reform needs to be in the total structuring of education. When the overall structure is oriented largely towards individual achievements, rather than the community, it would be very difficult if not impossible to implant value education measures.

Values are essentially one's response to others individually or collectively. Community living is the best method of inculcation of values. Individuals must be attuned to a way of living that promotes a sense of the collective good. Living for others demands a degree of self-sacrifice, mutual consideration and an inclination towards general discipline.

The challenge is to formally make the time-tested values part of the educational system. For this, there needs to be an overhaul of the higher education structure. One has to start from redefining the aims of education. If one's life duties are towards the larger entities such as family, society, nation, humanity, nature, etc, then the aim of all education would be to prepare the next generation to fulfill these duties productively and efficiently. This is the paradigm shift that is most needed as a prerequisite to any other reform. Here the aim of education is defined collectively and not individually. All kinds of personality development or individual efficiency enhancements must thus be oriented towards a larger common goal. This collective consciousness would then have to manifest itself in the course structures, campus culture, and teaching methodology.

The university education should be oriented towards learning rather than being teaching centric because self-motivation is the most important attitudinal requirement for value inculcation. The onus of learning must be shifted on the students collectively from the present system of a teacher centric educational process. Classrooms, tutorials, libraries, and laboratories must become student oriented. The learning process must be a collective project of students, guided by motivated teachers. Teachers, though important, are incidental, whereas students are the essential component in the educational structure. In this value-centered paradigm, senior students would act as mentors for the newcomers. Mentoring would also be the most important aspect of the educational experiences of the senior students. This open framework allows a large number of students to have a more fruitful and productive educational experience with the able assistance of few faculty members. Presently the universities restrict the number of seats in all the courses thus creating a false demand that results in many types of malpractices and corruptions. Open structure of student centric collective learning can cater to any number of students with existing infrastructure and knowledge resources.

The most important value which needs to be emphasised in the present scenario is that of co-existence. The cut throat competition of the professional world begins at the campus level thus smothering the spirit of cooperation at the outset. A structure encouraging group studies and collective evaluation would promote cooperation rather than competition. In all modern professional activities, teamwork has become more important than individual excellence. Many companies in recent times have shown a trend to recruit second tier students rather than the toppers. A study by one of the business schools elaborated on the reasons behind this trend. The toppers are found to be intensely individualistic and fiercely competitive. These characteristics are major impediments in team work. A team in modern management parlance is defined as a group of individuals working to fulfill a common task. The Bharatiya concept of family is more profound because it is based on

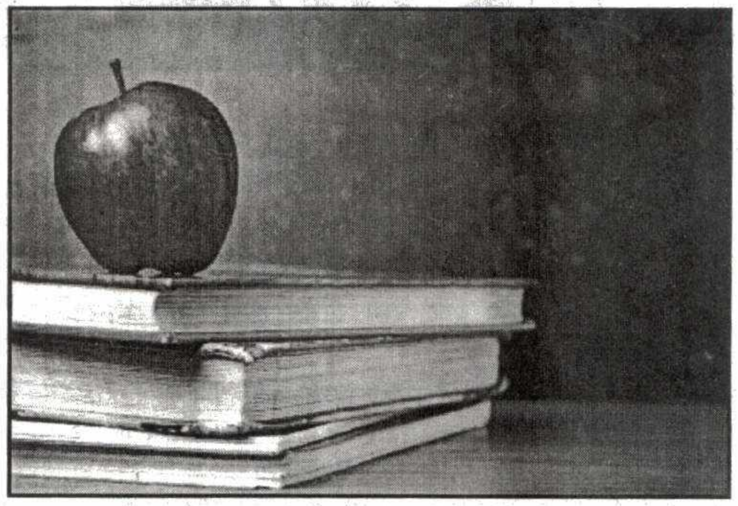

oneness instead of commonness. In a family everybody feels one with each other. Pains and pleasures are felt as of one's own. Success of one's family member gives joy to all others as if he/she has succeeded. Education which cultivates this quality of realising oneness will create a more harmonious society and will also help in professional functioning based on teamwork.

Apart from oneness of existence, the other most important reality of life is the uniqueness of the individual. Each individual is born with irreplaceable set of attributes which make him/her a unique person. Education must help in the blossoming of this unique seed of personality. An open structure which promotes collective growth should have enough flexibility to give space to this unraveling of uniqueness. Multiple choices of subjects, smooth vertical or horizontal credit transfers, multiple entry and exit options will ensure these opportunities for individual unfolding.

Everything that exists has a purpose. Even the manmade objects have a purpose of existence. The chair that has been made by man, has a purpose behind its existence. It provides comfort to others by facilitating them to sit on it. It does not enhance its own comfort. Similarly, the purpose behind the existence of the car is to transport others to their destination. It does not exist for transporting itself. Hence we can conclude that each and every particle of the universe has its mission of serving others and therefore man also does not exist only for himself but for serving others. These basic concepts should become part and parcel of the educational process and should get enshrined on the psyche of all the students. We should not merely stuff the value of community into the educational curricula and impose it on the students in a mechanical and monotonous way. Doing so would be counterproductive and the very purpose of holistic education would be defeated. The techniques of evaluation should be designed in such a way that one who contributes will get more credits than one who acquires. This will create a character which values 'giving' rather than 'taking'.

Value education is not an appendage to be added to the existing labyrinthine of educational philosophies but it is an organic process of inculcating character-building habits. It is not possible to achieve value education by mechanical maneuvering. It needs nurturing

conitnued on page no. 11

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,

श्री नरेन्द्र मोदी जी,
माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय, साऊथ ब्लॉक, नई दिल्ली।

विषय : सोमनाथ मंदिर की तर्ज पर अयोध्या में श्री राम जन्म स्थान पर भव्य राम मंदिर बनाने की मांग।

महोदय,

अयोध्या में मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम के जन्म स्थान पर भगवान राम का मंदिर बनाने हेतु देश के हिंदूवादी व राष्ट्रवादी संगठन पिछले ६० वर्षों से प्रयासरत हैं। अयोध्या में भगवान राम का मंदिर निर्माण सवा सौ करोड़ हिन्दुओं के लिये आस्था का विषय है। यह भारत की सांस्कृतिक पहचान से भी जुड़ा विषय है। भारतीय जनता पार्टी पिछले ३० वर्षों से राम मंदिर के मुद्दों के कारण राजनीतिक लाभ प्राप्तकर रही है। १६८४ में केवल दो सांसदों की पार्टी भाजपा राम मंदिर निर्माण के मुद्दों के आधार पर २०१४ में पूर्ण बहुमत की सरकार तक पहुंच चुकी है। प्रत्येक लोकसभा चुनावों में भाजपा ने राम मंदिर बनाने का संकल्प दोहराया है। पिछले चुनाव २०१४ से पूर्व भी राम मंदिर निर्माण का वादा आपने देशवासियों से किया था। परन्तु एक वर्ष पूरा हो जाने के उपरान्त भी राम मंदिर निर्माण की दिशा में कोई पहल नहीं की गई है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है। इससे देश के करोड़ों हिन्दू आहत महसूस कर रहे हैं।

आपको ज्ञात है कि गुजरात में सोमनाथ मंदिर का पुनरूद्धार तत्कालीन कांग्रेस की सरकार द्वारा संसद में विशेष कानून बनाकर किया गया था। उस समय पं० जवाहर लाल नेहरू प्रधानमंत्री तथा सरदार बल्लभ भाई पटेल गृहमंत्री थे। यदि इसी तर्ज पर अयोध्या स्थित श्री राम मंदिर का निर्माण भी कर दिया जाये तो करोड़ों हिन्दूओं की आस्था की रक्षा होगी। अतः आपसे अनुरोध है कि संसद के वर्तमान मानसून सत्र में ही विशेष कानून बनाकर सोमनाथ मंदिर की तर्ज पर अयोध्या स्थित श्री राम जन्म स्थान पर भव्य श्री राम मंदिर के निर्माण का निर्णय लिया जाये।

सादर,

भवदीय

चन्द्र प्रकाश कौशिक	**मुन्ना कुमार शर्मा**	**वीरेश त्यागी**
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कार्यालयमंत्री

प्रतिष्ठा में,

आदरणीय श्री मोहन राव भागवत जी,
सरसंघचालक,
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ,
नागपुर महाराष्ट्र।

विषयः संघ के आनुषंगिक संगठन राष्ट्रीय मुस्लिम मंच द्वारा रोजा इफ्तार के आयोजन को बंद कराने हेतु।

महोदय,

आपको ज्ञात हो कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आनुषंगिक संगठन राष्ट्रीय मुस्लिम मंच द्वारा रोजा इफ्तार का आयोजन लगातार किया जा रहा है। संघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य श्री इन्द्रेश कुमार द्वारा कई रोजा इफ्तार दावतों का आयोजन किया गया है। आपको हिन्दू महासभा द्वारा इस आयोजन का विरोध करते हुए कहना चाहते हैं कि यह आयोजन संघ की विचारधारा के विपरीत है। इस आयोजन से संघ की छवि लगातार खराब हो रही है। इन आयोजनों से लगता है कि अब संघ भी कांग्रेस, भाजपा सहित अन्य दलों की तरह ही मुस्लिम तुष्टीकरण का कार्य कर रही है। यह हिन्दू हित में नहीं है। संघ से पूरे विश्व के हिन्दुओं को बड़ी उम्मीदें हैं। परन्तु राष्ट्रीय मुस्लिम मंच की गतिविधियों से हिन्दुओं की उम्मीदों पर पानी फिर रहा है। संघ के संरक्षण में गठित इस मंच की कार्य प्रणाली पर हिन्दू महासभा को घोर आपत्ति है। हिन्दू महासभा का मानना है कि यदि संघ भी अल्पसंख्यक तुष्टीकरण का कार्य करेगी तो हिन्दू हितों का कुठाराघात होगा तथा हिन्दुत्व, राष्ट्रवाद व राष्ट्ररक्षा के कार्य में लगे उत्साही हिन्दुओं विशेषकर युवाओं का मनोबल टूटेगा। अतः आपसे अनुरोध है कि हिन्दू हित व राष्ट्रहित में राष्ट्रीय मुस्लिम मंच को तत्काल भंग कर दें तथा इस कार्य में लगे संघ के कार्यकर्त्ताओं को हिन्दुत्व के कार्य में लगायें।

सादर,

भवदीय

चन्द्र प्रकाश कौशिक	**मुन्ना कुमार शर्मा**	**वीरेश त्यागी**
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कार्यालयमंत्री

भारतीय मूल के डॉक्टर को ब्रिटेन में मिली मानद फेलोशिप

हिन्दू महासभा ने प्रसन्नता व्यक्त किया

भारतीय मूल के एक डॉक्टर को एक प्रैक्टिशनर और चिकित्सा शिक्षक के तौर पर समुदाय में योगदान देने के लिए प्रमुख ब्रिटिश विश्वविद्यालयों में से एक ने मानद फेलोशिप प्रदान की है। यूनिवर्सिटी ऑफ सेंट्रल लंकाशाइर ने ७७ वर्षीय शिव पांडे को मानद फेलोशिप प्रदान की है। यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर माइकल थॉमस ने कहा न सिर्फ अपने पेशे में बल्कि हमारे व्यापक समुदाय में, इतने ज्यादा क्षेत्रों में इतनी उपलब्धि शायद ही किसी डॉक्टर ने हासिल की है। उन्होंने कहा एक समर्पित मेडिकल प्रैक्टिशनर, अथक चौरिटी कैम्पेनर, संपूर्ण प्रसारक, प्रख्यात शिक्षाविद के तौर पर शिव पांडे एमबीई बहुसंस्कृति वाले ब्रिटेन के किसी भी नागरिक के लिए उत्कृष्ट रोल मॉडल पेश करते हैं। पांडे ने कहा इतने वर्षों में राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा में जनरल प्रैक्टिशनर, जस्टिस ऑफ पीस, प्रसारक, चौरिटी कार्यकर्ता की भूमिका निभा कर मैंने बहुत आनंद लिया। वह इंडियन जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन के सदस्य भी हैं। भारत में जन्मे और पढ़े पांडे ने अपनी एमबीबीएस तथा एमएस की डिग्री भारत में ही हासिल की। वह १६७१ में ब्रिटेन चले गए जहां उन्होंने १६७४ से लंदन चेस्ट हॉस्पिटल, ब्रॉड ग्रीन हॉस्पिटल और लिवरपूल स्थित फैजोकरली हॉस्पिटल में काम किया। १६७५ में उन्होंने जनरल प्रैक्टिस शुरू की और ३० साल के बाद २००५ में सेवानिवृत्त हुए। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा है कि भारतीय पूरी दुनिया में सफलता का डंका बजा रहे हैं।

संसद का कामकाज ठप्प नहीं किया जाना चाहिए, कांग्रेस और भाजपा द्वारा किये घोटालों की जांच हो : हिन्दू महासभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने एक संयुक्त वक्तव्य जारी करके भाजपा और कांग्रेस द्वारा संसद का कामकाज ठप्प किये जाने की कड़ी आलोचना करते हुए दोनों पार्टियों द्वारा किये गए घोटालों की जांच की मांग की है। गौरतलब है कि संसद का चालू सत्र हंगामों की भेंट चढ़ता जा रहा है और इसके लिए कांग्रेस भाजपा को दोषी ठहरा रही है तो भाजपा कांग्रेस पर हंगामा करने का आरोप लगा रही है। राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश कौशिक ने दोनों पार्टियों द्वारा किये गए घोटालों की सख्ती से और तय समय में जांच किये जाने की मांग की है, जिससे व्यापम, ललित गेट, हरीश रावत शराब घोटाला इत्यादि मामलों में सच्चाई जल्द से जल्द सामने आ सके। राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा ने सोनिया गांधी को संसद का कामकाज चलने देने का आह्वान करते हुए कहा कि यदि उनकी पार्टी ने घोटालों पर घोटाला नहीं किया होता तो आज लोकसभा में उनकी पार्टी के मात्र ४४ सांसद नहीं होते। राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने मोदी सरकार द्वारा विपक्ष की आवाज दबाये जाने के आरोपों के प्रति सजग होने को कहा, क्योंकि लोकतंत्र को न तो चुप कराया जा सकता है और न ही दबाया जा सकता है। हिन्दू महासभा के केंद्रीय पदाधिकारियों ने स्पष्ट कहा कि यदि संसद में कामकाज को इसी प्रकार ठप्प किया जाता रहा तो हिन्दू महासभा जनजागृति अभियान चलाकर इन पार्टियों के राष्ट्रविरोधी रूख को उजागर करेगी।

शेष पृष्ठ 5 का **पालतू जानवर रखने से.....**

के लिए भी फायदेमंद होते हैं, जैसे उनके कपड़े, उनकी ट्रॉली, उनका मार्डन फूड आदि। गंदे और खराब भोजन खिलाने से अच्छा है कि उन्हें मार्केट में मिल रहे रेडी टू इट फूड ही खिलाएं।

कुछ खास बीमारियों तो पालमू जानवरों से खास तौर से होती हैं-

स्केबीज - यह एक प्रकार का त्वचा रोग है जिसमें त्वचा में खुजली होने लगती है, आगे चलकर यह ऐक्जीमा का रूप ले सकता है।

राउंडवोर्म - राउंडवोर्म के अंडे आसानी से बच्चों या बड़ों के संपर्क में आ जाते हैं जिससे शरीर में कई प्रकार की समस्याएं उभर सकती है।

रिंगवोर्म - यह एक प्रकार का त्वचा, सिर या बालों में होने वाला संक्रमण होता है। जिसमें बालों का झड़ जाना, शरीर के अंगों पर गोलाई में चकते होना इसके लक्षण हो सकते हैं।

कैट - स्क्रैच यह ऐसा बैक्टीरियल संक्रमण है, जो कि बिल्लयों से मुनष्य तक पहुंचता है। यह एक खरोंच के द्वारा भी हो सकता है। इससे तेज बुखार, भूख न लगना, कमजोरी आदि हो सकता है।

रेबीज - यह अक्सर जानवरों के काटने से होता है। इससे बचने के लिए मार्केट में उपलब्ध इजेंक्शन लगवाना पड़ता है।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 12 का **महामना मालवीयजी के.....**

२२. ''जो तप निष्काम भाव से फल ही इच्छा त्याग कर, दान दया से सम्पन्न होकर श्रद्धा और धैर्य के साथ मन, वाणी और शरीर से किया जाता है, वह सात्विक कहलाता है।''

२३. ''मन को जीतना अर्थात् काम–क्रोध–लोभ–मोह से बचना, और शुद्ध संकल्पयुक्त रहना, किसी विषय वृत्ति के कारण विक्षिप्त होकर फिर भी उस पर विजय प्राप्त करना, व्यवहार–काल में छल–कपट, धोखा, फरेब से मन को दूर रखना, मन को सात्विक बनाना है। यह मन द्वारा सात्विक तप करना है।''

२४. ''वाणी का सात्विक तप यह है कि जो वाक्य असत्य, दुःखदायी अप्रिय और खोटा हो उसे किसी समय, किसी भी अवस्था में मुंह से न निकालना, बल्कि प्रिय, सत्य और मधुर वचन बोलना।''

२५. ''शरीर से अर्थात् शरीरवयवों, हस्तपादादि कामेन्द्रियों द्वारा दूसरों की सहायता और सेवा करना, गिरे हुओं को उठाना, देश और जाति की सेवा के लिए अपने शरीर के कष्ट और दुःख ही परवाह न करना, बल्कि यदि आवश्यक हो तो धर्म और परोपकारार्थ शरीर अर्पण कर देना, यह काया का सात्विक तप है।''

२६.'' सच्चे तप का भाव उस देश भक्त में है, जो अपने देश एवं अपनी जाति के गौरव और प्रतिष्ठा, कीर्ति और मान, सम्पत्ति और ऐश्वर्य की वृद्धि के लिए दृढ़ इच्छा रखता है, तथा अनेक प्रकार के दुःखों, और कष्टों को सहन करने, कठिन से कठिन मेहनत और श्रम को उठाने और विहनों से मुकाबला क़रने को उद्यत रहता है।''

सत्य और शील

२७. ''बिना कई लोगों के मिले कोई बड़ा कार्य नहीं हो सकता। लोग आपस में मिलकर तभी कार्य कर सकते हैं, जब उनमें परस्पर विश्वास हो। परस्पर विश्वास तभी हो सकता है, तब सब के सब सत्य के अनुयायी हों।''

२८. सत्य जीवन का प्राण, समाज की उन्नति का साधन, तथा नैतिकता, सहयोग और संस्कृति का आधार है।

२६. ''शील मानव का सब से उत्तम भूषण'' और ''धर्म का लक्षण है।''

३०. ''राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को आचार के शासन से सदा शासित तथा प्रभावित रहना चाहिए, तभी उनमें विश्वास, मृदु–भाषण तथा व्यवहार की सच्चाई और सद्‌गुणों का विकास हो सकता है।''

३१. ''धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध धर्म के दस लक्षण हैं।''

३२. चित्त शुद्धि, ईश्वर की आराधना, समाज के हित की कामना, लोक कल्याण में लगन, मनुष्यता से विभूषित शील, विनय पूर्वक सेवा, विवेकपूर्ण साहस, देश–भक्ति, सदाचार–नैतिक उत्कर्ष के साधन हैं।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलती

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक..150/- रुपये
द्विवार्षिक..300/- रुपये
आजीवन सदस्य.....................................1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केंवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 8 का **शिक्षा में सर्वत्र व्याप्त.....**

विश्वगुरु तो बहुत दूर की कौड़ी है, हम न तो शिक्षा का स्तर सुधार सकते हैं और न ही हम 'डिजिटल इण्डिया' और 'स्किल्ड इण्डिया' को सफल साकार बना सकते हैं। इस बात से शायद ही कोई असहमति का दुस्साहस कर सके कि फर्जी डिग्री, अयोग्य शिक्षक, अनुशासनहीन छात्र, व्यापम घोटाले जैसे कारक प्रमाण हैं कि हमारी शिक्षा पद्धति में खोट है। ऐसे में अगर स्तरविहीनता है, अनैतिक ढ़ंग से चुनाव, परीक्षा और भर्ती के जारी रहेगी। भ्रष्टाचार, अपराध और असुरक्षा को खत्म करने की बातों पर तालियां बेशक बजे लेकिन इसे वास्तविकता के धरातल पर हटाया नहीं जा सकता। ऐसे में सबसे बड़ा यक्ष प्रश्न यह है कि क्या हमारे नीति निर्माता शिक्षा को मात्र नौकरी पाने का माध्यम बनाने की बजाय चरित्र निर्माण का माध्यम बनाने की आवश्यकता महसूस कर भी रहे है या वे अभी भी अपनी 'हवा–हवाई' दुनिया में ही विचरण कर रहे हैं।

conitnued from page no. 9 **STRUCTURAL .....**

facilitated by love and care The process of value education is very similar to that of gardening, each and every sapling planted is carefully tended, protected from expected hazards, nourished by manure, water and provided a propitious environment till it finally evolves into a sturdy tree not only capable of independent existence but also contributing to the society in the form of fruits, wood, and other valuable products. There are several parallels between the conscientious manner in which the mother judiciously blends admonition and affection to mould her child's character and the skilful manner by which the value education should get transmitted from the teacher to the students.

शेष पृष्ठ 1 का **भारतीय इलाकों की जासूसी में.....**

रवि गांधी ने बताया कि पाकिस्तान ने राजस्थान के जैसलमेर जिले से लगी अंतरराष्ट्रीय सीमा के २०० से ३०० मीटर की दूरी में कुछ कैमरे लगाए थे। लेकिन सीमा सुरक्षा बल के एतराज के पाकिस्तान ने अब उन कैमरों को हटा दिया है। यह पहला मौका नहीं है जब पाकिस्तान ने सीमा पर अंतरराष्ट्रीय सीमा नियमों का उल्लंघन किया है। इससे पहले भी दोनों देशों के बीच थार एक्सप्रेस के रूप में रेल सेवा की शुरूआत के कुछ समय बाद ही अंतरराष्ट्रीय सीमा नियमों का उल्लंघन करते हुए पाकिस्तान ने अंतरराष्ट्रीय सीमा से महज कुछ मीटर की दूरी पर प्लेटफार्म का निर्माण किया था। इस मामले में कई बार सीमा सुरक्षा बल के एतराज के बाद भी पाकिस्तान द्वारा अब तक प्लेटफार्म को नहीं हटाया गया है। सूत्रों के अनुसार करीब दो माह पहले अप्रैल में पाकिस्तान द्वारा जैसलमेर जिले से लगती अंतरराष्ट्रीय सीमा के २०० से ३०० दूरी पर मानव रहित विमान की मदद से भारतीय सीमा की जासूसी करने का प्रयास किया गया था, जिस पर भी सीमा सुरक्षा बल ने कड़ा एतराज जताया था। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने भारतीय क्षेत्र में पाकिस्तान द्वारा जासूसी किये जाने पर आपत्ति दर्ज किया है। तथा केन्द्र की राजग सरकार से मांग की है कि सभी कैमरो को शीघ्र हटवाया जाये। उन्होंने कहा है कि, खुफिया तंत्र की विफलताओं के कारण ही गुरूदासपुर की घटना घटी है। इसलिये भारतीय एजेंसियां सतर्क रहे ताकि इस प्रकार की घटना फिर नहीं हो सकें।

शेष पृष्ठ 7 का **मदनलाल ढींगरा की....**

लालकाका की हत्या के आरोप में उनपर २३ जुलाई, १६०६ को अभियोग चलाया गया। अंत में १७ अगस्त, १६०६ को उन्हें फांसी दे दी गई। भारत समेत ब्रिटेन में भी मदनलाल के समर्थन में आवाजें उठीं पर उन्हें नजरअंदाज कर दिया गया। अंग्रेजों की तानाशाही की वजह से उनके शरीर को, ना ही उनके परिवार और ना ही सावरकर जी को सौंपा गया। मदनलाल ढींगरा को पेण्टोविले की जेल, लंदन में फांसी पर चढाया गया। यह वही जेल थी जहां शहीद उधमसिंह को भी फांसी दी गई थी। १३ दिसम्बर, १६७६ को शहीद उधम सिंह की शव को तलाशने आई टीम को मदनलाल ढींगरा का भी शव मिला जिसे बाद में आजाद भारत में विधिवत तरीके से दफना दिया गया। एक महान क्रांतिकारी को पराधीन भारत में मरने का तो मौका नहीं मिला पर उनकी अस्थियों को आजाद भारत की मिट्टी नसीब हुई। देश अपने शूरवीर क्रांतिकारियों पर हमेशा से गर्वित रहा है और आगे भी रहेगा। देश में आज लोग उधमसिंह और मदनलाल ढींगरा जैसे वीरों को भूल जरूर गए हैं लेकिन उनकी उपलब्धियों और देशभक्ति की भावना को चाहकर भी भुलाया नहीं जा सकता।

दिनांक 12 अगस्त से 18 अगस्त 2015 तक

साप्ताहिक व्रत-पर्व

पर्व	तिथि	दिन
शिवरात्रि	12 अगस्त	बुधवार
अखण्ड भारत दिवस	14 अगस्त	शुक्रवार
अमावस्या	14 अगस्त	शुक्रवार
हरियाली तीज	17 अगस्त	सोमवार
मदन लाल धिंगरा पुण्यतिथि	17 अगस्त	सोमवार
विनायक चतुर्थी	18 अगस्त	मंगलवार

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2013-14-15
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

महामना मालवीयजी के सदुपदेश

मनुष्यता

१. "ब्रह्म की ज्योति अपने भीतर ही है, वह सब जीवधारियों में समान है।"

२. "मनुष्य के पशुत्व को ईश्वरत्व में परिणत करना ही धर्म है।"

३. "मनुष्यत्व का विाकस ही ईश्वरत्व और ईश्वर है।"

४. "मनुष्यत्व सर्वोपरि है। उसका स्थान जात–पात और सामुदायिक भ्रातृत्व से ऊपर है।"

५. "मनुष्यत्व मनुष्य का विशिष्ट गुण है। मनुष्यत्व से रहित मनुष्य पशु के समान है।"

समता-

६. "परमात्मा की सृष्टि में मनुष्य–मनुष्य में कोई भेद नहीं। सब ही बुद्धि और विकास के समान नियमों के अधीन हैं।"

७. "सब में समान जीव है।" "जो सब परिस्थितियों में अपनी उपमा से सबको समान देखता है वह योगी है।"

८. "समत्व की सिद्धि ही जीवन सिद्धि है। "सबके साथ आत्मौपम्य निष्पक्ष व्यवहार" उसकी मांग है। "जीवमात्र से प्रेम" उसकी शर्त है। "प्राणिमात्र की निष्काम सेवा" उसका साधन और मानव का परम धर्म है।

९. "प्रत्येक मनुष्य अपने को एक बड़ी समष्टि की इकाई समझकर उसके हित के लिए जीवित रहे और काम करे, लोककल्याण और लोकसंग्रह को परम पुरुषार्थ समझे।"

धर्म-

१०. "हर परिस्थिति में दृढ़ता के साथ धर्म का पालन मनुष्य का पुनीत कर्तव्य है।" "धर्म अविनाशी है, सुख–दुख आते जाते हैं।"

११. धर्म उन व्यवस्थाओं, उन नियमों का नाम है जो समाज को राज्य के भिन्न अंगों को धारण किये रहता है।

१२. "धर्म का उद्देश्य देश में शान्ति, समृद्धि और सुख उत्पन्न करना तथा मनुष्य को पारलौकिक विषयों के चिन्तन करने के योग्य बनाना है।"

१३. "शस्त्रविहित विधियों का अन्धवत् अनुकरण हानिकार है। शस्त्रविहित शब्दों का वास्तविक तात्पर्य और अर्थ समझना और उन शब्दों के साथ उच्च भावों और विचारों का सम्बन्ध करना सामाजिक व्यवहार और नीति के सुधार के लिए आवश्यक है।"

१४. "बिना मूल सिद्धान्तों को दृढ़ किये धर्म का प्रचार और उसकी उन्नति करना ऐसा ही असंभव है, जैसा कि बिना किसी बुनियाद के किसी इमारत को खड़ा करना।

१५. जनता में धर्म के सजीव तत्त्वों और मूल सिद्धान्तों का प्रचार किया जाय, उसमें उचित गुण उत्पन्न किये जायें, उसे अपने कर्त्तव्यों का ज्ञान कराया जाये और इस तरह समाज में जीवन शक्ति संचारित की जाये।

१६. "समाज सुधार शाश्वत, सर्वकालीन है।" धर्म और संस्कृति के मूल सिद्धान्तों की अंधविश्वास से निर्मुक्त शास्त्रानुकूल व्याख्या द्वारा दोषपूर्ण प्रधाओं और रुढ़ियों का संशोधन किया जाय। ज्ञान के सजीव तत्त्वों को पुष्ट किया जाये, लोक–कल्याण का विस्तार किया जाये।

तप-

१७. समाज के उत्कर्ष में संलग्न समाज–सुधारक अपने आचार–व्यवहार का संशोधन करें और प्रगतिशील सजीव मर्यादाओं का दृढ़ता से पालन करें।

१८. तप तीन प्रकार के सात्विक, राजसिक, तामसिक होते हैं। तामसिक तप से अधःपतन, सात्विक तप से जीवन का उत्कर्ष और समाज की अभिवृद्धि होती है।

१९. तामसिक और राजसिक प्रक्रियाओं और मनोभावों को त्याग कर सात्विक तप का अनुसरण किया जाये।

२०. "सच्चा तप यह है कि अपने भाइयों के ताप से तपा जाय, सच्चा यज्ञ यह है जिसमें अपने स्वार्थ की आहुति दी जाय। सच्चा दान यह है कि परमार्थ किया जाय, और सच्ची ईश्वर सेवा यह है कि उसके दुःखी जीवों की सहायता की जाय।"

२१. सात्विक तप से "अभ्युदय और निःश्रेयस, स्वर्ग और मोक्ष, धन और सम्पत्ति, नाम से यश, बल और पराक्रम, सुख और शान्ति, राज्य और अधिकार सब की ही प्राप्ति होती है।"

शेष पृष्ठ 11 पर

कबिरा खड़ा बजार में

कब जगेंगी सरकारें

केन्द्र में मोदी सरकार के बनते ही एक उम्मीद जगी थी कि देश में कानून का राज हो न हो, लेकिन महिलाओं का सम्मान जरूर होगा। महिलाओं के प्रति हो रही हिंसा में कमी जरूर आयेगी। लेकिन, जैसे मोदी ने देश का कोई सपना पूरा नहीं किया, ठीक उसी तरह यह सपना भी सपना ही रह गया। महिलाओं के प्रति अपराध में इधर और इजाफा हुआ है। राह चलती लड़की से छेड़खानी। छेड़खानी का विरोध करने पर लड़की पर तेजाब फेंका। इकतरफा प्रेम के मामले में दिनदहाड़े लड़की की हत्या। लड़की को मनचलों ने बस से फेंका। गुंडों का विरोध करने पर लड़की को चलती ट्रेन से फेंका। ये खबरें भारत के किसी भी प्रदेश से, किसी भी दिन, किसी भी वक्त की मानी जा सकती हैं, क्योंकि ये कभी पुरानी नहीं पड़तीं। छेड़खानी और अपमान के प्रसंग निरंतर घटित होते रहते हैं। इस देश में लड़कियां न मां की कोख में सुरक्षित रह गई हैं, न जन्म लेने के बाद। हर तरफ पैने दांत और नाखून लिए भेड़िए इस तरह घूम रहे हैं कि लड़कियां न घर की चारदीवारी के भीतर महफूज हैं, न भरे बाजार में। रोजाना जिस तरह की घटनाएं सामने आ रही हैं, उससे लगता है कि भारत में केवल देवी प्रतिमाएं ही सुरक्षित हैं, जीती–जागती लड़कियों के लिए यह देश बेहद असुरक्षित हो गया है। शायद ही कोई दिन बीतता हो जब बलात्कार की कोई खबर न आती हो। निर्भया कांड के बाद से बलात्कार के साथ–साथ छेड़खानी रोकने के लिए भी कड़े कानून बनाने की बात कही गई। जगह–जगह इतने प्रदर्शन नारी के सम्मान के लिए हुए कि लगा अब सचमुच समाज बदलाव की ओर बढ़ेगा। लेकिन जैसे सड़े–गले पानी में कितना भी इत्र क्यों न डालें, दुर्गंध आती ही रहेगी। वही हाल हमारे समाज और लोगों की मानसिकता का है। लैंगिक भेद की इस मानसिकता के कारण ही छेड़खानी और बलात्कार जैसी घटनाएं होती हैं। लैंगिक भेद की कुल्हाड़ी समाज ने अपने पैर पर मार ही ली है, राजनीतिक दल और सत्तारूढ़ सरकारें भी इस दिशा में किसी सुधार की इच्छुक नहीं दिखती हैं। नरेन्द्र मोदी और अरविंद केजरीवाल दोनों ने अपने चुनावों में नारी सुरक्षा को बड़ा मुद्दा बनाया और कांग्रेस को हमेशा आड़े हाथों लिया। अब इनके शासन में भी लड़कियां कितनी सुरक्षित हैं, यह सच सामने आ रहा है। दिल्ली के आनंद पर्वत इलाके में १६ साल की मीनाक्षी को दो भाइयों ने ३५ बार चाकुओं का वार कर हत्या कर दी, वो लड़की लहूलुहान सरेआम मदद के लिए भागती रही, चिल्लाती रही, उसकी मां उसे बचाने आई तो उसे भी चाकू मारा गया। ये सब तमाशा लोग देखते रहे। कोई मदद के लिए नहींआया। भीड़ ने इतनी हिम्मत नहींदिखाई कि चाकू मार रहे लोगों को मिलकर रोकें या पुलिस को मदद के लिए बुलाएं। अगर इन दो लोगों के साथ भीड़ को किसी को पीटने के लिए कहा जाता तो कई मुट्ठियां तन जातीं। मीनाक्षी ने दम तोड़ दिया और केंद्र व दिल्ली के बीच चल रही तनातनी को नई सांसें मिल गई। अरविंद केजरीवाल ने पहले सारा ठीकरा मोदी सरकार के सिर फोड़ा, बाद में जनता का मूड समझते हुए मृतका के परिजनों से मिले। पांच लाख का मुआवजा दिया, जांच के आदेश दिए। केंद्र सरकार के अधीन दिल्ली पुलिस आती है, तो यह भी देखना है कि मोदी सरकार इस पर क्या करती है। इस घटना से समाज में लड़कियों की सुरक्षा का प्रश्न ही नहीं खड़ा हुआ है, पुलिस की भूमिका पर भी नए सिरे विचार की आवश्यकता दिख रही है।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2013-14-15
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 05 अगस्त से 11 अगस्त 2015 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुदित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।